# गुल-ओ-ख़ार

जिगर जालन्धरी

गुल-ओ-ख़ार
जिगर जालन्धरी

# गुल-ओ-ख़ार

जिगर जालन्धरी

## ग़ुल-ओ-ख़ार

इधर एक पल है हजूम-ए-मुसर्रत
उधर एक पल ग़म का आलम है प्यारे
ज़माना जिसे ज़िंदगी कह रहा है
ग़ुल-ओ-ख़ार का एक संगम है प्यारे

जिगर जालन्धरी

1. केंन्द्रीय कृषि मंत्री श्री बलराम जाखड़ लेखक से उन की शायरी की किताबें स्वीकार करते हुए। बाईं ओर पंजाब के मुख्य मंत्री श्री बेअन्त सिंह खड़े हैं।

2. लेखक अपनी शायरी की किताबों का सैट मुख्यमंत्री पंजाब श्री बेअन्त सिंह को भेंट करते हुए। वित्त मंत्री डा. केवल कृष्ण साथ खड़े हैं।

3. पंजाब के राज्यपाल श्री सुरेंद्र नाथ राज्य स्तरीय आज़ादी दिवस समारोह पर लेखक को पंजाब सरकार के "प्रमाण पत्र 1991" से सम्मानित करते हुए।

4. बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री डा. जगन नाथ मिश्रा लेखक को "आल इंडिया मीर अकादमी एवार्ड" से सम्मानित करते हुए।

5. भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में लेखक को सम्मानित करते हुए (27.2.1987)

6. "अन्दाज़-ए-जिगर" के रिलीज़ समारोह पर 'जश्न-ए-जिगर कमेटी' के प्रधान श्री अमर सिंह सिंगला पटियाला शहरीयों की ओर से लेखक को सम्मानित करते हुए।

*7. नार्थ ज़ोन कलचर्ल सैंटर पटियाला के डाइरैक्टर श्री ए. एस. छतवाल, आई. ए. एस. सैंटर की ओर से लेखक को सम्मानित करते हुए।*

*8. लेखक अपने परिवार के साथ।*
*"ख़ुशी से कट रही है ज़िन्दगानी"*

## नाम–वर शायर/अदीब फ़रमाते हैं

'जिगर' जालन्धरीं जौहर-ए-क़ाबिल कहे जाने के मुस्तहिक़ हैं।

**पदमश्री जोश मलसियानी**

'जिगर' का हर शेयर हुस्ने-मानो और हुस्ने-बयां का आईना दार होता है।

**जनाब साहिर स्यालकोटी**

'जिगर' के शेयर पढ़ने वाले को अपनी कहानी मालूम होते हैं—यही कमाल है जिगर में।

**मौलाना अबर अहसनी गन्नौरी**

'जिगर' का कलाम बड़ा दिल-नशीं, पुरकशिश और पुरअसर होता है। दिलो-जां को सरूर और आंखों को नूर बख़शता है।

**जनाब रत्न पंडोरवी**

'जिगर जालन्धरी' ऊर्दू के तहज़ीबी धागों को अपने अशआर की बुनत में इस्तेमाल करने पर क़ादिर हैं।

**डाक्टर वज़ीर आग़ा (पाकिस्तान)**

'जिगर' के कलाम में झोल, उलझन, पेचीदगी नाम को नहीं, अकसर अशआर तीरो-निश्तर होते हैं जो बग़ैर याद किए याद हो जाते हैं।

**जनाब क़ैस जालन्धरी**

'जिगर' का कलाम अयूब से पाक और शेयरी महासिन का एक पैकरे-जमील है।

**जनाब साहिर हुशयार पुरी**

'जिगर' के अशआर क़ारी या सामे के दिल पर फौरन असर करते हैं।

**जनाब ख़ुमार बारा बंकवी**

ख़यालात को ख़ुश-असलूबी से ब्यान करना जिगर का हिस्सा है। उनकी शायरी साहिरी है।

**जनाब ऊदे सिंह शायक़**

'जिगर जालन्धरी' को ज़बानो-बयां, मानी-ओ-लताफ़त और रमज़-ओ-कनाया के इस्तेमाल पर एक फ़न्नी क़ुदरत हासिल हो चुकी है।

**जनाब राम लाल (लखनऊ)**

'जिगर जालन्धरी' के कलाम में जज़बात और महसूसात का गुदाज़ है और सोज़-ओ-साज़ भी है।

**जनाब कशमीरी लाल ज़ाकिर**

## पत्र-पत्रिकाओं के विचार

'जिगर जालन्धरी' एक गूंजती आवाज़ का नाम है।

**ट्रिब्यून**

'जिगर जालन्धरी' इन्सानी क़दरों के शायर हैं।

**इंडियन ऐक्स प्रैस**

'जिगर' का कलाम 'आप बीती' भी है 'जग बीती' भी है इसमें वकालत का नामो निशान नहीं।

**हिन्द समाचार**

'जिगर जालन्धरी' इन्सानियत के संदेश-वाहक हैं।

**चढ़दी कला**

'जिगर जालन्धरी' अपने को किसी ख़ास सम्प्रदाय अथवा धर्म से नहीं बांधना चाहते। उन्होंने मानवता धर्म को अपनाया है।

**पंजाब केसरी**

'जिगर' की ग़ज़लों, कविताओं और शेयरों में एक ख़ास कसक है।

**जन सत्ता**

बंदिश की चुस्ती, रवानी, बरजस्तगी-ओ-शगुफ़्तगी 'जिगर' की ग़ज़लों की वो मजमूई ख़सूसियात हैं जो पूरे कलाम में जारी-ओ-सारी हैं।

**परवाज़-ए-अादब**

'जिगर जालन्धरी' के बारे में यह कहा जा सकता है कि उन्होंने इस तख़ल्लुस को हक़ बजानिब साबित किया है। उर्दू ग़ज़ल में उन्होंने भी ऐसे इज़ाफ़े किए हैं जो इस सिनफ़े सुख़न की बक़ा के ज़ामिन हैं।

**पास बान**

## लेखक का जीवन दर्पण

नाम : धर्मपाल मरवाहा

तख़ल्लुस : जिगर जालन्धरी

जन्म तिथि : 18-1-1935

जन्म स्थान : सारंग देव, ज़िला अमृतसर (पंजाब)

शिक्षा : बी. ए; एल एल. बी.

अदीब फ़ाज़िल

सम्मान : (i) यू. पी. उर्दू अकादमी एवार्ड 1980

(ii) लख़्त-ए-जिगर पर भाषा विभाग पजांब का सर्वोतम अदबी एवार्ड 1981

(iii) आल इंडिया मीर अकादमी एवार्ड 1985

(iv) यू. पी. उर्दू अकादमी एवार्ड 1985

(v) साहिर लुधियानवी एवार्ड 1986

(vi) राष्ट्रपति द्वारा सम्मान 1987

(vii) पंजाब सरकार द्वारा सिविल डिफेंस सर्विस मैडल 1987

(viii) चढ़दी कला साहित्यक एवार्ड 1988

(ix) पंजाब सरकार द्वारा 1990 का शिरोमणि साहित्यकार एवार्ड

(x) पंजाब सरकार द्वारा 1991 का प्रमाण पत्र

(xi) नार्थ ज़ोन कलचरल सैंटर द्वारा सम्मान 1991

(xii) पंजाब राज्य बिजली बोर्ड द्वारा साहित्य एवार्ड 1991

इनके अतिरिक्त पंजाबी यूनिवर्सिटी, रोटरी-क्लब पटियाला मिड टाऊन रोटरी क्लब जालन्धर, जालन्धर जे. सीज़, हीरो साईकल प्राईवेट लिमिटड लुधियाना और नैशनल थियेटर आर्टस सोसाईटी की ओर से भी सम्मानित किए जा चुके हैं।

रचनायें : (i) सोज़-ए-जिगर 1972

(ii) लख़्त-ए-जिगर 1979

(iii) ख़ून-ए-जिगर 1984

(iv) अन्दाज़-ए-जिगर
(देवनागरी लिपि) 1987

(v) अन्दाज़-ए-जिगर
(गुरुमुखी लिपि) भाषा विभाग
पंजाब द्वारा प्रकाशाधीन

(vi) दर्द-ए-जिगर 1990

(vii) गुल-ओ-ख़ार नई पुस्तक

विविध : पिछले 37 सालों से अपनी रचनाओं के द्वारा अदब और क़ौम की ख़िदमत कर रहे हैं। देश के सरकारी और ग़ैर-सरकारी रसालों और अख़बारों में आपका कलाम छपता रहता है। दूरदर्शन, रेडियो और दूसरे सरकारी व ग़ैर-सरकारी मुशायरों में शामिल होते रहते हैं। प्रसिद्ध गायक और गायकायें आपका कलाम रेडियो और दूरदर्शन पर गाते रहते हैं और अदबी महफ़िलों में भी पेश करते रहते हैं। इनमें सर्व श्री मनमोहन सिंह, एस एस बिन्दरा, डाक्टर हर-फूल, सलीम इक़बाल, महेन्द्र सिंह नगीना, उस्ताद बल्लो, गुरनाम सिंह, राजबीर सिंह, श्रीमती कमल हंसपाल और रतिका तिवाड़ी के नाम काबिल-ए-ज़िकर हैं।

# अपनी बात

तजरिबे के तौर पर 1987 में 'अन्दाज़-ए-जिगर' के नाम से ग़ज़लों का एक संग्रह देवनागरी लिपि में निकाला था। पाठकों ने उसे बहुत पसन्द किया और हाथों हाथ लिया। ऐसे पाठकों की ख़ाहिश का एहतराम करते हुए जिनको ऊर्दू शायरी से बहुत लगाव है लेकिन इसकी लिपि से नावाक़िफ़ हैं, 'गुल-ओ-ख़ार'[1] के नाम से यह संग्रह देवनागरी लिपि में मंज़रे-आम पर लाया जा रहा है। इसमें ग़ज़लों के इलावा क़तआत भी हैं। हर क़तए का उनवान दिया गया है ताकि पढ़ने वाला मज़मून का ज़यादा लुत्फ़ उठा सके। उम्मीद है पाठक पसन्द करेंगे।

मैं अपनी बीवी कमला अबाहा का शुक्रिया अदा करना अपना फ़र्ज़ समझता हूं जिन्हों ने सारे मसव्वदे को बड़ी मेहनत से हिंदी में लिखा और मुशकिल लफ़ज़ों के अर्थ देने में मेरी बहुत मदद की।

मैं उन तमाम बुज़ुर्गों, मेहरबानों, और दोस्तों का शुक्रगुज़ार हूं जिनकी दुआ, मदद और तहरीक से इस संग्रह ने छपाई तक की मंज़िलें तय की हैं। इस सिलसिले में जनाब बाल कृष्ण सिंगला जनरल सैक्रेटरी जश्न-ए-जिगर कमेटी पटियाला का नाम ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िकर है।

1. फूल और कांटे

## ख़ुदा—ए-मेहरबां

एक ज़र्रे को उछाला, इक सितारा कर दिया !
एक क़तरे को बढ़ाया और दरिया कर दिया !
इक नज़र से मुझ ख़ज़फ़ रेज़े[1] को ऐ रब्ब-ए-करीम[2] !
इक ज़माने की नज़र में दुर्रे-यकता[3] कर दिया !

## कृष्ण उपदेश

ऐ बशर ! ऐ बशर ! ऐ बशर !
काम कर, काम कर, काम कर
बे ख़तर[4], बे ख़तर, बे ख़तर
बे समर[5], बे समर, बे समर
ख़ौफ़ है तुझको किस बात का ?
ख़ाक है यह सरापा[6] तेरा
असलियत है तेरी आतमा
मौत से जो न होगी फ़ना

---

1. ठीकरा 2. दयालु परमात्मा 3. अनमोल मोती
4. निर्भय 5. निष्फल 6. बदन ।

# ग़ज़लें

वो रूठ के मन पायेंगे-कुछ कह नहीं सकते,
हम बिगड़ी बना पायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

हम जिनकी तमन्ना में ये दिन काट रहे हैं,
वो दिन भी कभी आयेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

आई है इधर मौत-उधर आये हैं वो भी,
जायेंगे कि रह जायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

अफ़साना-ए-दिल सुनने को माइल[1] तो हुए हैं,
क्या सुनके वो फ़रमायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

कुछ कहने को हम उनकी तरफ़ जा तो रहे हैं,
कुछ कह भी उन्हें पायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

दुनिया ने हमें ज़ख़्म बहुत गहरे दिए हैं,
तड़पेंगे कि मर जायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

रोशन तुझे हम रक्खेंगे ऐ ग़मे महब्बत,
लौ और बढ़ा पायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

मिलने उन्हें जाते हैं हम आखों में लिए अश्क,
यह जाम छलक जायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

जो बहर-ए-महब्बत[2] में 'जिगर' कूद पड़े हैं,
वो पार भी लग जायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

---

1. राज़ी 2. प्यार का सागर।

सोचता है रात दिन हमको मिटाने के लिए,
वन गये रस्म-ए-महब्बत हम ज़माने के लिए।

रूठिए तो किस भरोसे पर किसी से रूठिए,
कौन है जो आयेगा हमको मनाने के लिए ?

जिन पे साया करते करते पेड़ बूढ़ा हो गया,
उफ़-वो ही बेताब हैं उसको मिटाने के लिए।

ख़ून-ए-दिल से पूछिए,ख़ून-ए-जिगर से पूछिए,
कितना रोया हूं ज़माने को हंसाने के लिए।

उनको चुनते चुनते मैंने उम्र सारी काट दी,
नाम को थे चार तिनके आशियाने के लिए।

ज़िन्दगी क्या जब कोई मक़सद नहीं मतलब नहीं,
कुछ हक़ीक़त भी है लाज़िम इस फ़साने के लिए।

हंसते हंसते ख़ुद किसी बस्ती में जा बसते हैं दोस्त,
छोड़ जाते हैं हमें रोने रुलाने के लिए।

यह तो हो सकता है सुन कर रहम आ जाये उन्हें,
दिल कहां से लाऊं हाले दिल सुनाने के लिए ?

काटनी मुशकिल नहीं ख़ारों की सोहबत में 'जिगर'!
हो कलेजा भी गुलों का मुस्कराने के लिए।

रात दिन सांप जहां डसते हैं,
हम उन्हीं वस्तीयों में बसते हैं ।

और हर चीज़ यहां मंहगी है,
एक इन्सान हैं जो सस्ते हैं ।

दिल जो टूटे तो ये आवाज़ आई,
"बसते बसते ही यह घर बसते हैं" ।

आपके वादों से क्या बहलें हम,
कागज़ी फूलों के गुलदस्ते हैं ।

मौत से मर नहीं जाता इन्सां,
चलने वाले को बहुत रसते हैं ।

बोलना जिनको सिखाया हमने,
हम पर आवाज़े वो ही कसते हैं ।

एक दिल और हज़ारों अरमां,
इक मुसाफ़िर है कई रस्ते हैं ।

मन्ज़िलें क्यों हैं फिर अपनी अपनी ?
वो ही राही हैं, वो ही रस्ते हैं ।

ऐसे नागों को 'जिगर' ! क्या कहिए ?
राह चलतों को भी जो डसते हैं ।

मुहब्बत करने वाले ग़म से घबराया नहीं करते,
जो घबराते हैं वो इस राह पर आया नहीं करते।

तसव्वुर में भी आते हो तो पर्दा करके आते हो,
यूं अपने चाहने वालों से शरमाया नहीं करते।

तुम अपने झूटे वादों से तसल्ली हमको देते हो,
किसी को काग़ज़ी फूलों से बहलाया नहीं करते।

यही है ज़िन्दगी अपनी-तो क्या है ज़िन्दगी अपनी ?
मुसीबत में किसी के काम जब आया नहीं करते।

कलेजे से लगा कर क्यों न रक्खूं दिल के दाग़ों को ?
यह वो गुल हैं ख़ज़ां में भी जो मुर्झाया नहीं करते।

तुम्हारा ही ख़याल आता है सोते जागते अब तो,
किसी की ज़िन्दगी पर इस क़दर छाया नहीं करते।

निगाहें डालता हूं उनके रुख़ पर तो यह कहते हैं,
"गुलों को आग के शोलों में झुलसाया नहीं करते।"

हमारे ज़िक्र पर वो इस तरह झुंझला के कहते हैं,
"वो दीवाने हैं, दीवानों को समझाया नहीं करते"।

बसा कर दिल में अरमां मुस्कराते फिरते हो इतना,
'जिगर'! ये पेड़ वो हैं, जो कभी साया नहीं करते।

जो भी कागज़ पे उतारी सूरत,
बन कर उभरी वो तुम्हारी सूरत ।

हमने सूरज की तरह जल जल कर,
इक ज़माने की निखारी सूरत ।

आजकल शहर में बचकर चलिए,
बदले फिरते हैं भिकारी, सूरत ।

अब ये सूरत है कि हर सूरत में,
नज़र आती है तुम्हारी सूरत ।

शमा इक रात से आगे न बढ़ी,
कौन जलता है हमारी सूरत ।

ये ख़ता फ़न की है, पत्थर की नहीं,
न बनी तुमसे जो प्यारी सूरत ।

आप ख़ैरात न देकर देखें,
झट बदल लेगा भिकारी सूरत ।

कभी पत्थर को न पत्थर समझूं,
उसमें बसती है तुम्हारी सूरत ।

ऐ 'जिगर' ! वक़्त की सूरत पे न जा,
कब बदल ले ये मदारी सूरत ?

प्यार इतना उसे दिया हमने,
दर्द को दिल बना लिया हमने।

आदमीयत बहुत ज़लील हुई,
जो न करना था, वो किया हमने।

तलख़ीयां ज़िन्दगी की क्या कहिए ?
ज़हर पीना था, पी लिया हमने।

अपनी सूरत न दर्द ने बदली,
लाख उल्टा इसे किया हमने।

घर पड़ोसी का फूंक देने को,
अपने घर को जला दिया हमने।

रंज पर रंज दे रही है तू,
ज़िन्दगी ! तेरा क्या लिया हमने ?

अपने दीपक बुझा लिए, लेकिन,
रुख़ हवा का बदल दिया हमने।

शैतनत[1] को भी शर्म आने लगी,
ख़ुद को रुसवा बहुत किया हमने।

मौत से ख़ौफ़ हो तो क्यों हो 'जिगर' ?
जितना जीना था, जी लिया हमने।

1. शैतानपन

बंद कमरे में मेरी सांस घुटी जाती है,
खिड़कीयां खोलूं तो ज़हरीली हवा आती है।
आने वाला है बहुत जल्द ज़माना अपना,
इसी उम्मीद पे उम्र अपनी गुज़र जाती है
क्यों बुरा मौत को कहते है ज़माने वाले,
ये तो इन्सां के बुरे वक़्त में काम आती है।
हादसे लाख हों रुकता नहीं हस्ती का सफ़र,
कितने तूफ़ानों में ये नाव बढ़ी जाती है।
वो तो बेताब हैं दामन मेरा भरने को मगर,
हाथ फैलाते हुए मुझको हया आती है।
ज़िन्दगी आठों पहर मुझसे ख़फ़ा रहती थी,
अब जुदा होने लगा हूं तो मरी जाती है।
मैं तेरी याद को शबनम कहूं या शोला कहूं ?
कभी बहलाती है दिल को, कभी तड़पाती है।
वो तो आई है नया रूप तुझे देने को,
ज़िन्दगी ! मौत से तू किस लिए घबराती है।
ऐ 'जिगर' ! रहता है जो दिल की हर इक धड़कन में,
क्यों उसे सामने आते हुए शर्म आती है ?

दिल में रहती है एक प्यारी शक्ल,
क्या वही तो नहीं तुम्हारी शक्ल ?

आईने के लिए तो यक्सां[1] है,
वो तुम्हारी हो या हमारी शक्ल।

कोई सूरत हो, कोई आलम[2] हो,
भूलती ही नहीं तुम्हारी शक्ल ।

देखो आईना, शौक़ से देखो,
देखने दो हमें भी प्यारी शक्ल ।

देर तक वक़्त देख सकता नहीं,
प्यारी सूरत, किसी की प्यारी शक्ल ।

आईने से उलझ रहा है कोई,
याद आई न हो हमारी शक्ल ।

देखते ही उतर गई दिल में,
भोली भोली वो, प्यारी प्यारी शक्ल ।

अपने जल्वों को रक्खो पर्दे में,
नज़र आती नहीं तुम्हारी शक्ल ।

चांद इतना हसीं कहां था 'जिगर' !
सामने थी किसी की प्यारी शक्ल ।

---

1. बराबर 2. स्थिति ।

मेरा जीवन मौत का कारन,
मैं हूं आप ही अपना दुशमन ।

ख़ूब ज़माना था बचपन का,
हर आंगन था अपना आंगन ।

उसकी दीद को आंखें तरसें,
प्यासी नदियां ढूंडें सावन ।

नज़रों में रहने दो जलवे,
फूलों से भरने दो दामन ।

याद तुम्हारी सीना-ओ-दिल में,
यानि ख़ुशबू आंगन आंगन ।

सूनी राहें, सूनी गलियां,
दर दर भटके एक भिकारन ।

सौ बार अब्र - ए - करम[1] बरसा है,
ख़श्क है फिर भी हिरस का दामन ।

हर कोई छेदे फूल का सीना,
ख़ुश रंगी[2] है जान की दुशमन ।

होश 'जिगर' ! उल्फ़त में है लाज़िम,
दोस्त भी बन सकता है दुशमन ।

---

1. बख़्शिश का बादल 2. सुन्दरता ।

ज़माने से कोई जाने लगा है,
ज़माना फूल बरसाने लगा है।

कोई जी भर के तड़पाने लगा है;
महब्बत का मज़ा आने लगा है।

तुम्हारा बातें करना मुस्करा कर,
मेरी साँसों को महकाने लगा है।

निगाहें फेर ली हैं क्या किसी ने,
ज़माना हमसे कतराने लगा है।

कहा करते थे जिसको अबरे रहमत[1],
वो हम पर आग बरसाने लगा है।

जुदाई में कहूँ क्या हाल दिल का,
ख़ज़ां से फूल मुरझाने लगा है।

हमारा क्या तअल्लुक़ है किसी से ?
कोई क्यों हम से शरमाने लगा है ?

बने हैं फूल दिल के दाग़ खिल कर,
दिल-ए-नाकाम काम आने लगा है।

वो ज़ालिम भी 'जिगर' ! कहता है मुझसे,
तेरा यह प्यार तड़पाने लगा है।

---

1. दया का बादल।

दिल उसे कैसे भूलने पाये,
भूलने पर जो और याद आये।

मेरे ग़म का कोई इलाज नहीं,
ज़िन्दगी जाए, ज़िन्दगी आये।

उसकी रहमत से जब रहे महरूम[1],
हम न करके गुनाह पछताये।

कुछ तो सामां हो अपने जीने का,
तुम न आओ तुम्हारी याद आये।

यह हक़ीक़त है या फ़साना है,
ज़िन्दगी को न हम समझ पाये।

ग़म के कांटों को लेके, दुनिया पर,
हमने ख़ुशियों के फूल बरसाये।

ख़ाक है तेरी असल ऐ नादां, !
ख़ाक पर इस क़दर तू इतराये !

डस रही हैं यह दिल को शामो-सहर[2],
काश ! इन हसरतों को मौत आये।

उमर भर उलझनों में, रह के 'जिगर' !
गेसू-ए-वक़्त[3] हमने सुलझाये !

---

1. वांछित 2. सुबह शाम 3. वक़्त की उलझनें।

दिल तड़प कर उन्हें तड़पाता है,
प्यार में लुत्फ़ बड़ा आता है।

जिन्दगी की नहीं कोई मंज़िल,
कारवां है कि बढ़ा जाता हैं।

सबकी सूरत में है तेरी सूरत,
तू मुझे सबमें नजर आता है।

आ गई होगी मेरी याद, उन्हें,
कौन आईने से शर्माता है।

कब वो रूकते है किसी मंज़िल पर,
जिनको चलने में मजा आता है ?

मेरी नज़रों में समाने वाले !
मुझसे छुप छुप के कहां जाता है ?

कोई आसां है मिटाना मुझको ?
इस ज़माने पे तरस आता है।

उनसे बेहतर है तसव्वुर उनका,
जब बुलाता हूँ, चला आता हैं।

आज इन्सान के हाथों ही 'जिगर' !
ख़ून इन्सां का हुआ जाता है।

आदमी को अगर ख़ुदा कहिए,
फिर बताओ, ख़ुदा को क्या कहिए ?

जब ज़माने के साथ चलना है,
क्यों न पत्थर को आईना कहिए ?

मर चुका है ज़मीर लोगों का,
जो भी जी चाहे आपका, कहिए ।

दर्द की जब कोई दवा ही नहीं,
क्यों न फिर दर्द को दवा कहिए ?

क़तरे क़तरे को हम तरसते हैं,
तेरी दरया - दिली को क्या कहिए ?

इस ज़माने में जीने वालों को,
आफ़रीं कहिए, मरहबा कहिए ।

सब के चेहरों पे नक़ली चेहरे हैं,
असल में कोई क्या है, क्या कहिए ।

है इसी में सलामती अपनी,
रहज़नों[1] को भी रहनुमा[2] कहिए ।

कौन से हम भी इतने अच्छे हैं,
क्यों किसी को 'जिगर' ! बुरा कहिए ?

---

1. लुटेरे 2. राह दिखाने वाला ।

खफ़ा मौत हो, ज़िन्दगी रूठ जाये,
किसी पर कभी वक़्त ऐसा न आये।

वो अपनी जफ़ा पर न क्यों तिलमिलाये, !
कभी मेरी आंखों में आंसू न आये।

महब्बत नहीं, ये तो इक दिल लगी है,
भुलाने से कोई अगर भूल जाये।

गुज़ारे जो हमने तेरे साथ रहकर,
मुसीबत में वो दिन बहुत काम आये।

अगर मैं दीया हूं, जलाये वो मुझ को,
अगर फूल हूं तो गले से लगाये।

किसी का जहां आग में जल रहा है,
कोई चैन से बैठकर गीत गाये।

उन्हें किस क़दर पास[1] था मेरे ग़म का,
मेरे चाहने पर भी आंसू न आये।

करिशमें दिखाती है क्या क्या महब्बत,
किसी को गिराये, किसी को उठाये।

जफ़ा से, दग़ा से, वफ़ा से, दुआ से,
न वो बाज़ आये, न हम बाज़ आये।

अगर रूप देखूं, तेरा रूप देखूं,
अगर याद आये, तेरी याद आये।

तेरे रंग लाखों, तेरे रूप लाखों,
मेरी इक नज़र कैसे पहचान पाये ?

'जिगर' ! मैं किसी के क़दम का निशां हूं,
ज़माना न क्यों मुझको सर पर उठाये ?

---

1. लिहाज़

दुनिया ने मेरे दीदा - ए - पुरनम[1] नहीं देखे,
इसको है गुमां, मैंने कभी ग़म नहीं देखे ।

इन्सान बहुत देखे हैं शैतान से बढ़ कर,
इन्सान फ़रिश्तों से भी कुछ कम नहीं देखे ।

आगे न बढ़ों मेरी हंसी से तेरी नज़रें,
अफ़सोस, कभी तूने मेरे ग़म नहीं देखे ।

ख़ुशियां भी बहुत देखी हैं ऐ दिल ! तेरे हाथों,
दिन हमने मुसीबत के भी कुछ कम नहीं देखे ।

दिल कहता है - सीधी हैं बहुत राह - ऐ - महब्बत,
क्या इसने तेरे गेसुओं के ख़म नहीं देखे ?

जी भर के ये रोने भी नहीं देते किसी को,
ऐ दीदा - ए - तर[2] ! तूने अभी ग़म नहीं देखे ।

मग़रुर 'जिगर' ! क्यों है ज़माने की वफ़ा पर,
क्या तूने बदलते हुए मौसम नहीं देखे ?

---

1. भीगी आंखें 2. भीगी आंख ।

बेताबीयों में, अशकों में, नालों में घिर गये,
यानि हम अपने चाहने वालों में घिर गये।

जिन को न कुछ ख़बर थी तेरी जलवा गाह[1] की,
वो लोग मस्जिदों में, शिवालों में घिर गये।

कल तक जो इक जहान को करते थे ला-जवाब,
आज अपने लाजवाब स्वालों में घिर गये।

जब अपनी बात के लिए कुछ भी रहा न पास,
हम लोग दूसरों के हवालों में घिर गये।

आया न ख़वाब में भी कभी अपना कुछ ख़्याल,
हम इस क़दर अंधेरों, उजालों में घिर गये।

हम डालियों से टूटे हुए ऐसे फूल हैं,
जो सूख कर किताबों, रसालों में घिर गये।

उन को ख़ुशी, मैं उनकी महब्बत में क़ैद हूं,
मुझ को ख़ुशी, वो मेरे ख़्यालों में घिर गये ?

जिन को नसीब हो न सकीं दिल की मस्तियां,
वो बदनसीब मय के प्यालों में घिर गये।

इक पल भी रह सके न अकेले हम ऐ 'जिगर' !
निकले जो भीड़ से तो ख़्यालों में घिर गये।

---

1. बसेरा

ज़ेर - ए - लब[1] उनका मुस्करा देना,
दिल में शहनाईयां बजा देना।

वो खुद उनका ख़्याल करता है,
जो नहीं जानते दुआ देना।

जाने वाले! ये बात याद रहे,
हम को आसां नहीं भुला देना।

ऐ ख़ुदा! बारिश-ए-करम के साथ,
इक समुन्दर का हौसला देना।

कहीं बे आसरा न कर दे हमें,
इस क़दर तेरा आसरा देना।

हमको रोने की तो इजाज़त दो,
अगर आता नहीं हंसा देना।

लाख 'हातिम' हो कोइ, लाख 'करण',
कौन दे सकता है तेरा देना?

सौ बहारों की है बहार 'जिगर'!
उन का रह रह के मुस्करा देना।

---

1. होठों में

कब पलट कर वो ज़माना आयेगा,
आदमी जब आदमी बन जायेगा।

पेड़ को तू काट कर पछतायेगा,
फूल, फल क्या साये से भी जायेगा ।

तोड़ते हो आईने को किस लिए ?
ये जो देखेगा, दिखाता जायेगा।

क्यों परेशां हो कोई कल के लिए ?
कल जब आयेगा तो देखा जायेगा।

ग़म पर इतराता है क्यों तू इस क़दर, ?
ज़हर पीकर कितने दिन लहरायेगा ?

उड़ गया पंछी जो तेरे हाथ से,
हाथ मलने के लिए रह जायेगा।

हो मुबारक तुम को दुनिया दारियां,
यह हुनर हमसे न सीखा जायेगा।

पलकें रोकें ख़ाक अश्कों का हुजूम,
तिनको से दरिया न रोंका जायेगा।

ऐ 'जिगर' ! उनकी जफ़ा से जी न हार,
इस तरह तो जीते जी मर जायेगा।

ग़मे हस्ती से जो डर जाते हैं,
मरने से पहले ही मर जाते हैं।

रूठ जाते हैं किनारे जिनसे,
डूब कर पार उतर जाते हैं।

याद की टीस कहां जाती है?
वक़्त से ज़ख़्म तो भर जाते हैं।

ख़ौफ़ कितना है हमारे अन्दर,
सांस के शोर से डर जाते हैं।

गुलो शबनम की तरह हँस रो कर,
सबके दिन रात गुज़र जाते हैं।

चश्मे - तर[1] हम तेरी नादानी से,
उनकी नज़रों से उतर जाते हैं।

दिल शिकस्ता[2] हैं यहां तक हम लोग,
इक ही ठोकर से बिखर जाते हैं।

ग़म का तूफ़ां ही नहीं कम होता,
चढ़ के दरिया तो उतर जाते हैं।

कितने हस्सास[3] तबीयत हैं 'जिगर',
फूल की चोट से मर जाते हैं।

---

1. भीगी आंख 2. कमज़ोर दिल 3. नाज़ुक।

हर दिल यहां बेताब है - मालूम नहीं क्यों,
हर आंख में सैलाब है - मालूम नहीं क्यो।

इन्सान में तलख़ी कभी देखी न थी इतनी,
हर बात में ज़हराब[1] है - मालूम नहीं क्यों।

कल तक तो बड़े चैन से था आस का पंछी,
आज उड़ने को बेताब है - मालूम नहीं क्यों।

आवाज़ निकलती ही नहीं मुंह से किसी के,
हर हल्क़ में सीमाब[2] है - मालूम नहीं क्यों?

तूफ़ान तो पहले भी कई देखे हैं दिल में,
अब के बड़ा बेताब है – मालूम नहीं क्यों।

जो फूल है - कांटे की तरह सूख गया है,
कांटा जो है - शादाब है - मालूम नहीं क्यों।

जब साक़ी ओ मयख़ाना ओ मयकश हैं सब अपने,
फिर शीशों में जहराब है - मालूम नहीं क्यों।

फूलों की तरह जिसकी महक चारों तरफ़ थी,
शोलों में वो पंजाब है - मालूम नहीं क्यों।

मरघट में पड़ी लाशों की मानिन्द 'जिगर'! आज,
हर महफ़िल - ए - अहबाब[3] है - मालूम नहीं क्यों।

---

1. ज़हर 2. पारा 3. दोस्तों की महफ़िल।

इक निहत्ता आदमी तदबीर से,
क्या लड़े तक़दीर की शमशीर से ?

मुस्कराना ज़ेर - ए - लब हर वक़्त हो,
कोई सीखे आपकी तसवीर से।

फूल से पेश आइये नर्मी के साथ,
काटिए शमशीर को शमशीर से।

दिल में तेरी याद से है रोशनी,
आंख रोशन है तेरी तसवीर से।

अपने दीवाने की बेताबी का हाल,
पूछिए टूटी हुई जंजीर से।

टूट जाता तेरे दिल का आईना,
हम बहल जाते अगर तसवीर से।

जन्म ले लेता है तब इक और जुर्म,
जब सज़ा बढ़ जाती है तक़सीर[1] से।

इससे मेरा मान भी है - नाम भी,
कम नहीं मेरा क़लम शमशीर से।

दिल दुखे जिस से किसी का ऐ 'जिगर' !
चुप कहीं बेहतर है उस तक़रीर से।

---

1. क़सूर।

मेरा वजूद सरापा[1] गुनाहगार रहा,
तेरे करम पे मुझे कितना एतबार रहा।

मिलाप में भी तेरी हमसे बेरुख़ी न गई,
तमाम उम्र हमें तेरा इंतज़ार रहा।

जहां में शोर उठा मेरे इक तबस्सुम पर,
जहां ख़मोश था, जब तक मैं अश्क-बार रहा।

किसी ने अहद - ए - वफ़ा तोड़ भी दिया बेशक,
तअल्लुक़ात का रिश्ता तो बरक़रार रहा।

हमारे दिल में तेरी याद बार बार आई,
हमारे लब पे तेरा ज़िक्र बार बार रहा।

मुझे न ग़म था, न दुःख था, न दर्द था कोई,
तेरे क़रार की ख़ातिर मैं बेक़रार रहा।

तेरी निगाहे - कर्म जिस पे मेहरबान रही।
वो ज़र्रा चांद सितारों से हम किनार[2] रहा।

जहां में तेरे सिवा जब कोई भी और नहीं,
हमारे क़त्ल का फिर कौन ज़िम्मेदार रहा ?

तेरे तक़ाज़ों की निस्बत[3] से ज़िन्दगी न मिली,
'जिगर' ! पर ऐ ग़मे दुनिया ! तेरा उधार रहा।

---

1. सर से पांव तक 2. साथ 3. मुताबिक़

साफ़गोई से क्या लिया हमने ?
सबको दुश्मन बना लिया हमने ।

तुमको ऊंचा उठाने की ख़ातिर,
खुद को नीचे गिरा लिया हमने ।

ज़िन्दगी से नजात मिल न सकी,
ख़ुदकुशी कर के क्या लिया हमने ?

ग़म की झोली में डाल कर ख़ुशियाँ,
ग़म को अपना बना लिया हमने ।

तेज़ इतना चले कि मौत को भी,
चंद क़दमों पे जा लिया हमने ।

रह के ख़ारों के साथ गुल की तरह,
अपना दामन बचा लिया हमने ।

वो हमारे न बन सके, लेकिन,
उनको अपना बना लिया हमने ।

जब किसी से भी आसरा न मिला,
अपना ही आसरा लिया हमने ।

अपने छोटों के साथ उलझ के 'जिगर' !
अपना रुतबा घटा लिया हमने ।

मैंने जिस चीज़ की तमन्ना की,
बन के हसरत वो मेरे दिल में रही।

कितने बदज़ौक़[1] हो गये हैं लोग,
बात सुनते नहीं महब्बत की।

हम कुएँ की तलाश में निकले,
जब न पानी की बूंद पास रही।

अच्छे होना न जब हमीं चाहें,
क्या करे चारागर की चारागरी ?

ज़िन्दगी भर न हमको चैन मिला,
कोई तूफ़ां था, या तमन्ना थी !

मुस्करा कर मिला करो सबसे,
कभी मुरझायेगी न दिल की कली।

यूंहीं दिल को फ़रेब देता हूँ,
इस की तक़दीर में कहां है ख़ुशी ?

दोनों पहलू हैं ज़िंदगानी के,
अबर[2] का साया, धूप की गरमी।

ऐ 'जिगर' ! हसरतों के आलम में,
काम आई न अपनी ज़िन्दा दिली !

---

1. बेस्वाद 2. बादल

उनके लिए ख़ुदा से दुआ मांगते रहे,
यानि हम आप अपनी क़ज़ा[1] मांगते रहे।

सब कुछ था जिनके पास हमारा दिया हुआ,
हम ओढ़ने को उनसे रिदा[2] मांगते रहे!

सच तो यही है - अपनी भलाई से थी ग़रज़,
हम लोग दूसरों का भला मांगते रहे।

हम अपने घर के चांद सितारों को छोड़ कर,
बाहर से रोशनी को दीया मांगते रहे।

मैं ज़िन्दगी से तंग हूं यह जान बूझ कर,
वो मेरी ज़िन्दगी की दुआ मांगते रहे।

औरों को दर्द देना फ़क़त जिनका काम था,
हम उनसे दर्द - ए - दिल की दवा मांगते रहे

रोशन था जिनके साए से सूरज भी, वो बशर,
बुझते हुए दीयों से ज़या[3] मांगते रहे।

इक दुशमन - ए - वफ़ा से उमीद - ए वफ़ा
हम बिजलीयों से ठंडी हवा मांगते रहे

दो गज़ ज़मीन की थी ज़रूरत हमें 'जिगर'!
लेकिन हम उससे अरज़- ओ समा[4] मांगते रहे।

---

1. मौत 2. चादर 3. रोश्नी 4. ज़मीन और आसमान

सोचीए - कितना सआदत मंद[1] वो फ़रज़न्द[2] है,
अपने वालिद के जो दुशमन का अक़ीदत मंद[3] है।

वादा करके भूल जाना तेरी आदत है, मगर,
याद रख ये - मौत अपने वक़्त की पाबन्द है।

कुछ है कड़वा, कुछ है मीठा ज़िन्दगी का ज़ायका,
कुछ पता चलता नहीं - यह ज़हर है या क़ंद[4] है।

बंदा परवर ! आप की फ़ैयाज़ीयां[5] बेकार हैं,
आप से महरूम है वो, जो ज़रूरत मंद है।

अक़्ल से चलता नहीं है ज़िन्दगी का कारवां,
ख़ुद को जो नादां समझता है, वो दानिश मंद[6] है।

छीनता है जो ख़ुशी औरों की, दौलत मंद क्या ?
बांटता है दर्द जो औरों का, दौलत मंद है।

क्या भली सूरत तेरी इस पर बुरी आदत तेरी,
रेशमी कपड़ें में यानी टाट का पैवंद है।

दूर रखता है वो ख़ुद को हर तरह के रंज से,
हम जिसे दीवाना कहते हैं वो दानिशमंद है।

क्या हवा से भी यहां डरते हैं सब लोग - ऐ 'जिगर' !
जिस मकां को देखता हूं उसकी खिड़की बंद है।

---

1. ताबेदार 2. बेटा 3. श्रद्धालु 4. मीठा 5. दयालता
6. अक्लमंद।

हो रहा है यह क्या बहारों में ?
फूल बिखरे हैं रह - गुज़ारों में ।

हमसे छुप छुप के चांद तारों में,
बातें करते हैं वो इशारों में ।

मेरा हुस्नें - नज़र भी शामिल है,
आपके दिल - नशीं नज़ारों में ।

ऐसी मौजों से बचना - नामुमकिन,
छुप के रहती हैं जो किनारों में ।

तेरे जलवों को देख लेता हूँ,
फूल कलियों में, चाँद तारों में ।

यह शरफ़[1] फूल ही को हासिल है,
वरना हंसता है कौन ख़ारों में ?

पर्दा करना तो सीख ले ऐ दोस्त !
छुपता है, वो भी चाँद तारों में ।

दिल - ए - रंगीं मिज़ाज के सदक़े,
उमर गुज़री मेरी बहारों में ।

कल जो शामिल थे क़ातिलों में 'जिगर' !
आज बैठे हैं सोगवारों में ।

1. वरदान

मिट न सकता हो जो किसी के लिए,
कभी सोचे न दोस्ती के लिए।

खुदकुशी बुज़दिलों का काम नहीं,
चाहिए दिल भी खुदकुशी के लिए।

लोग कितनों के घर जलाते हैं,
अपने इक घर की रोशनी के लिए।

मेरे हंसने को आप क्या जानें ?
हंसता हूँ आपकी खुशी के लिए।

हमने कितने पहाड़ काटे हैं,
इक तमन्ना की मूर्ति के लिए।

ग़म से फ़ुरसत अगर मिले हमको,
हम भी सोचें ज़रा खुशी के लिए।

तेरे जलवे से भीक लेते हैं,
चाँद तारे भी रोशनी के लिए।

हम को ख़ुशियों की क्या ज़रूरत है ?
ग़म ही काफ़ी हैं जिन्दगी के लिए।

उमर भर दर - बदर भटकता हूं,
ऐ 'जिगर' ! मैं इक अजनबी के लिए।

तड़पा न दे जो दिल को, वो आवाज़ कुछ नहीं,
वो साज़ जिस में सोज़ न हो, साज़ कुछ नहीं ।

वो हुस्न क्या है, जिसको नहीं पास इश्क़ का ?
जो दूर हो नियाज़[1] से, वो नाज़ कुछ नहीं !

कब मन का रोग जाता है तन के इलाज से,
ये मेरे चारागर, मेरे दम - साज़[2] कुछ नहीं ।

भर दे जो दिल के ज़ख्म, वो आवाज़ खूब है,
कर दे जो दिल में ज़ख्म, वो आवाज़ कुछ नहीं ।

गुस्से के साथ हम से वो करते हैं गुफ़्तगू,
बातें हैं दिल - नशीं, मगर अंदाज़ कुछ नहीं ।

शाहों के मक़बरों पे ज़रा ग़ौर से नज़र,
यह मर्तबा, यह शान, यह एज़ाज[3] कुछ नहीं ।

ऐ शम - ए - ज़िन्दगी ! तुझे देखा है ग़ौर से,
अन्जाम कुछ नहीं, तेरा आग़ाज़ कुछ नहीं !

ग़म में न दिल - शिकस्ता[4] हुए हम ये सोचकर,
मिज़राब[5] से शिकस्ता हो जो साज़, कुछ नहीं !

दाद - ए - ख़ुलूस[6] मांग न दुनिया से - ऐ 'जिगर' !
इसकी नज़र में दावत - ए - शीराज़[7] कुछ नहीं !

---

1. नम्रता 2. दोस्त 3. सम्मान 4. दिल हारना
5. सितार बजाने वाला यंत्र 6. प्यार की प्रशंसा 7. मुहब्बत

साहिब - ए - दौलत[1] है जो, उसको अगर राहत नहीं,
राहत उसको भी नहीं जो साहिब - ए - दौलत नहीं।

दूसरों की शोख़ी - ए - रफ़्तार को नज़रों में रख,
आगे बढ़ने की अगर तुझ में सलाहीयत[2] नहीं।

लोग मिट्टी में मिला देते हैं आंसू की तरह,
आज की दुनिया में इन्सां की कोई क़ीमत नहीं।

ज़िन्दगी की नेमतों से किस क़दर महरूम है,
वो जो कहता है, मेरे दिल में कोई हसरत नहीं।

आंसुओं को ख़ुश्क कर देते हैं शोले दर्द के,
रोने वाले ! तेरे दिल में दर्द की शिद्दत[3] नहीं।

यह जहां कुछ भी नहीं इक धुन्दले शीशे के सिवा,
जो दिखाई देता है इस में, वो अस्लीयत नहीं।

अपनी सूरत देख कर हुस्न इतना इतराता है क्यों ?
रहने वाली क सूरत पर कोई सूरत नहीं !

दर्द ले लो दर्द - मंन्दो का अगर लेना है कुछ,
इससे बढ़ कर और दुनियां में कोई दौलत नहीं।

अहले - इज़्ज़त में तेरी इज़्ज़त बहुत है ऐ 'जिगर' !
वो तुझे समझेगें क्या, जिन की कोई इज़्ज़त नहीं।

---

1. अमीर 2. योग्यता 3. अधिकता

किस क़दर बंदे को हालात बदल देते हैं,
सभी ईमान, चलन, जात बदल देते हैं।

खतम करके भी नहीं छोड़ते ग़म इन्सां को,
सिर्फ़ क़ैदी की हवालात बदल देते हैं।

तुम ख़्यालात को कुछ सोच के लाना दिल में,
चलन इन्सां का ख़्यालात बदल देते हैं।

जब समझ लेते हैं वो, कोई नहीं इसका जवाब,
बातों बातों में मेरी बात बदल देते हैं।

आदमी वो नहीं, हालात बदल दें जिनको,
आदमी वो हैं, जो हालात बदल देते हैं।

दिल का कितना भी हो मज़बूत कोई शख़्स, मगर,
फिर भी हालात, ख़्यालात बदल देते हैं।

दिल रुबा बोल तेरे, रूहफ़ज़ा जलवे तेरे,
मेरा आलम, मेरे जज़्बात बदल देते हैं।

अदब आदाब की रस्मों को नई नसल के लोग,
कह के फ़रसूदा[1] ख़्यालात बदल देते हैं।

उनके दिन रात बदलते हुए देखे न 'जिगर' !
इक ज़माने के जो दिन रात बदल देते हैं।

---

1. घिसे पिटे

शायद उनको हमारी याद आई,
दिल में बजने लगी है शहनाई।

दोनों हाथों से लूटती है हमें,
कितनी ज़ालिम है तेरी अंगड़ाई।

अब ख़्यालों ने घेर रक्खा है,
रास आई न हमको तनहाई।

वो भी जलवा दिखाईए, जिससे,
ख़ुद तमाशा बने तमाशाई।

नूर ही नूर है निगाहों में,
दिल में किस की है जलवा फ़रमाई[1] ?

मौत भी बेन्याज़[2] रहती है,
ज़िन्दगी भी न हमको रास आई।

वो हमें ख़ाक - ए - पा[3] समझते हैं,
ये हमारी है इज़्ज़त अफ़ज़ाई।

हँस के दार - ओ - रसन[4] को चूमते हैं।
हम ख़लूस - ओ - वफ़ा[5] के सौदाई।

'जिगर' ! इन पत्थरों की दुनिया में,
ख़ाक होगी तेरी ये शनवाई।

---

1. नज़ारा 2. रूठी 3. पैरों की धूल 4. फांसी का फंदा
5. प्रेम दिवाने।

कितने मग़रूर हो गये हैं आप ?
हक़[1] से भी दूर हो गये हैं आप !

आप को किस तरह कोई देखे ?
जलवा-ए-तूर[2] हो गये हैं आप ।

हम को बदनाम करके दुनिया में,
कितने मशहूर हो गये हैं आप ।

सब के साथ एक सा सलूक नहीं,
ख़ूब दस्तूर[3] हो गये हैं आप ।

मेरी हसरत भरी निगाहों से,
कुछ तो मजबूर हो गये हैं आप ।

क्या करिशमा है, सामने आकर,
हमसे मस्तूर[4] हो गये हैं आप ।

जितने मजबूर हो गये हैं हम,
उतने मग़रूर हो गये हैं आप ।

आंख उठा कर भी देख सकते नहीं,
कितने माज़ूर[5] हो गये हैं आप !

आप का अक्स हूँ मैं, ग़ैर नहीं,
मुझ से क्यों दूर हो गये हैं आप ?

रिसते रहते हैं सुबह - ओ - शाम 'जिगर' !
ख़ुद ही नासूर[6] हो गये हैं आप !

---

1. सच्चाई 2. जला देने वाला जल्वा 3. क़ायदा 4. छुपना
5. बेबस 6. रिसता हुआ ज़ख़्म

जो बशर तेरी इनायत की नज़र तक पहुंचे,
हो के मक़बूल[1] वो ही शमस[2]-ओ-क़मर[3] तक पहुंचे।

रुख़ हवाओं का भी देख आग लगाने वाल,
कोई चिंगारी न उड़कर तेरे घर तक पहुंचे।

घेर रक्खा हो ज़माने की नज़र ने जिसको,
किस तरह फिर वो नज़र तेरी नज़र तक पहुंचे।

क्या हो अन्दाज़ा मेरे ग़म का जहां वालों को ?
दिल से आंसू न कभी दीदा–ए-तर तक पहुंचे !

रंग तसवीर-ए-महब्बत के उड़े जाते हैं,
काश ! आवाज़ मेरी अहले-नज़र[4] तक पहुंचे।

मयकदा[5] हो कि हरम[6] हो कि सनम-ख़ाना[7] हो,
राह बेहतर है वो ही, जो तेरे दर तक पहुंचे।

अहले साहिल को मिला कुछ भी न जुज़[8], गरद-ओ-ग़ुबार,
ग़रके - दरिया जो हुए लाल - ओ - गौहर तक पहुंचे।

इक सुरैया[9] की तवज्जो ही मुझे काफ़ी है,
सब सितारे न कभी सबकी नज़र तक पहुंचे।

गुलशन - ए - दिल से बहारों को न जाने दूंगा,
बात बेशक ये 'जिगर' ! ख़ून - ए - जिगर तक पहुंचे।

---

1. प्रसिद्ध 2. सूरज 3 चांद 4. नज़र वाले 5. शराबख़ाना
6. मस्जिद 7. मन्दिर 8. सिवाये 9. सब से ऊंचा सितारा

✺

ज़माने से हमें करके खाना,
करेगा याद रो रो कर ज़माना।

महब्बत को बसा लो तुम दिलों में,
नहीं इस से बड़ा कोई ख़ज़ाना।

सिला जो नेकियों का मांगते हैं,
है उनकी ज़िहनीयत[1] क्या ताजिराना[2]।

न जाने उस की क्या मजबूरियां थीं,
पड़ा ग़म में भी जिस को मुसकराना।

गुज़र जाता है आख़िर इक न इक दिन,
बुरा हो, ग्राह अच्छा हो ज़माना।

इनायत है ये मेरे दोस्तों की,
मुझे आता न था आंसू बहाना।

वफ़ा की क़दर जब होगी जहां में,
कभी तो आयेगा वो भी ज़माना।

बहार अपनी है क्या ? अपनी ख़ज़ां क्या ?
तुम्हारा मुस्कराना, रूठ जाना।

जिसे दर्द, ऐ 'जिगर' ! तू कह रहा है,
महब्बत के लिये है ताज़ियाना[3]।

---

1. स्वभाव 2. व्यापारक 3. चाबुक

☀

कोई ग़म है न शादमानी है,
कितनी बेकैफ़[1] ज़िन्दगानी है !

इब्तदा है न इन्तहा इसकी,
नामुकम्मल मेरी कहानी है।

वो जफ़ायें हमीं पे करते हैं,
मेहरबानी सी मेहरबानी है।

दु:ख के कांटे भी फूल हैं सुख के,
प्यार की रुत बड़ी सुहानी है।

ज़िन्दगानी की हर परेशानी,
ज़िन्दगानी के साथ जानी है।

सुन के तुम मुस्कराये जाते हो,
दर्द-ए-दिल क्या कोई कहानी है ?

कौन तेरे मिज़ाज को समझे ?
पल में है आग, पल में पानी है।

प्यार को किस लिये मिटाते हो ?
ये बज़ुरगों की इक निशानी है।

इस ज़माने में जी रहा है 'जिगर' !
आप ही की यह मेहरबानी है।

---

1. फीकी

क्या करिश्मे थे रहनुमाओं में,
लोग बटते गये ख़ुदाओं में ?

लीजिए दर्स[1] उन चिरागों से,
रक्स[2] करते हैं जो हवाओं में।

वो झिझक कर जफ़ायें करते हैं,
कुछ कमी है मेरी वफ़ाओं में।

पलट आये बहा के हम दो अश्क,
लाशें जलती रहीं चिताओं में।

ज़िन्दगी की बिना[3] है सांसो पर,
शमा ये जलती है हवाओं में।

दिल पे साये ग़मों के बढ़ने लगे,
चांद छुपने लगा घटाओं में।

ख़ैर गुज़री, जो वो न जान सके,
हम बहुत ख़ुश रहे जफ़ाओं में।

वो दीया हूं, जला कर उसने जिसे,
रख दिया सर फिरी हवाओं में।

'जिगर' ! अक्सर उदास रहता हूं,
जहर-आलूदा[4] सी हवाओं में।

---

1. शिक्षा 2. नाच 3 नींव 4. ज़हर भरी

तुम जो पूछोगे, ग़ज़ब होगा, क़यामत होगी !
हम हैं जिस हाल में, रहने दो, इनायत होगी।

दर्द - ए - दिल उसने दिया था हमें तड़पाने को,
क्या ख़बर थी उसे, इस दर्द से राहत होगी।

जिसने ठुकराया है इस दहर[1] की हर दौलत को,
उसकी नज़रों में कोई और ही दौलत होगी।

हम जफ़ाओं पर अगर तरके - वफ़ा कर बैठे,
सोच ले यह भी, तेरे दिल की जो सूरत होगी।

ग़म जहां भर के मुझे दे तो दिए हैं, लेकिन,
देख ले तेरी अमानत में ख़यानत[2] होगी।

हो सकेगा न जुदा हो के जुदा भी मुझ से,
मेरी नज़रों के मुक़ाबिल तेरी सूरत होगी।

ज़ुल्म सहने के गुनाहगार हमीं ठहरेंगे,
पूछ ताछ उनसे न कुछ रोज़े-क़यामत[3] होगी।

खींच सकता है उन्हें जज़बा-ए-दिल[4] तो, लेकिन,
हम से बर्दाशत न तौहीने - महब्बत होगी।

ऐ 'जिगर'! वो भी ज़माना कभी हम देखेंगे,
जब ज़माने में महब्बत ही महब्बत होगी।

1. दुनिया 2. चोरी 3. प्रलय का दिन 4. दिल की कशिश

आप ख़ुद अपनी तमन्ना कीजिए,
इश्क़ में इक हुस्न पैदा कीजिए।

धूप में ख़ुद जलिए पेड़ों की तरह,
दूसरों पर अपना साया कीजिए।

एक मैं भी तालिबे - दीदार हूं,
मेरे घर में भी उजाला कीजिए।

ग़ैर नीचा ख़ुद - ब - ख़ुद हो जाएगा।
ख़ुद को पहले उससे ऊंचा कीजिए।

कीजिए पहले मेरे दु:ख का इलाज,
फिर मसीहाई का दावा कीजिए।

बारिश - ए दीदार रुक रुक कर है क्या
हम पे सावन बन के बरसा कीजिए

ज़िन्दगी में इस क़दर मायूस क्यों ?
उसकी रहमत[1] पर भरोसा कीजिए।

फेर लें मुहं देख कर सब आप को,
ख़ुद को इतना भी न मैंहगा कीजिए।

जो ख़ज़ां में भी न मुरझायें 'जिगर' !
ऐसे फूलों की तमन्ना कीजिए।

---

1. मेहरबानी

तेरी खोज में फिरता हूँ,
मैं ख़ुद से बेगाना हूँ।

कुछ न संवार सका अपना,
ख़ुद से बहुत शर्मिन्दा हूं।

दुनिया मुझ से जलती है,
जैसे मैं भी शोला हूँ।

लोग मुझे यूं तकते हैं,
जैसे तेरा चेहरा हूं।

मौत जो होती है ख़ुश हो,
मैं कब मरने वाला हूँ?

जान से भी हो अज़ीज़ मुझे,
और तुम्हें कैसे चाहूँ।

कैसे रहूं हर हाल में ख़ुश,
मैं कोई दीवाना हूं?

यह मुझसे ख़ुश, वो नाख़ुश,
मैं सावन की बरखा हूं।

क्या जाने यह लोग 'जिगर'!
क्या पीकर लहराता हूं?

कितनी गर्द - ए - मलाल[1] है ? प्यारे !
सांस लेनी मुहाल है - प्यारे !

किसको अच्छा कहें, बुरा किसको ?
एक ही सब की चाल है - प्यारे !

दुशमनी पर भी जान देता हूं,
दोस्ती का कमाल है - प्यारे !

वक़्त के साथ चल न पायेगा तू,
तेज़ तर[2] इस की चाल है - प्यारे !

हाल - ए - दिल कहिए भी किसी से तो क्या ?
एक सा सब का हाल है - प्यारे !

किसी ज़ालिम को कह सके ज़ालिम,
किस की इतनी मजाल है - प्यारे !

मौत भी जिसको तोड़ सकती नहीं,
ज़िन्दगी ऐसा जाल है - प्यारे !

कौन है एक सा ज़माने में ?
अपना अपना ख़याल है - प्यारे !

'जिगर' ! अच्छा है यूं तो शायर भी,
आदमी बाकमाल है - प्यारे !

1. उदासी की धूल 2. बहुत तेज़

आरामे दिल - ओ - जां था कभी प्यार का साया,
अब तो है वो गिरती हुई दीवार का साया।

ऐ दोस्त ! अभी ख़ाम[1] तेरा हुस्न - ए - नज़र है,
कम फूल के साये से नहीं ख़ार का साया ।

हमसाये अब इतना भी गवारा नहीं करते,
मिल जाये जो दीवार से दीवार का साया।

तुम कृष्ण कन्हैय्या की तरह ख़ुद को बनाओ,
सांपो से अगर चाहते हो प्यार का साया।

ख़ैरात अगर आप उसे दे नहीं सकते,
दरवेश को दे दीजिए दीवार का साया।

नफ़रत की कड़ी धूप का दम टूट गया फिर,
फिर चारों तरफ़ बढ़ने लगा प्यार का साया।

दिल जान से भी प्यारा हुआ जाता है मुझको,
पड़ने लगा है जब से तेरे प्यार का साया।

क्यों कसरत - ए - ग़म में न हों कम दोस्त हमारे,
जब धूप बड़ी, घट गया दीवार का साया ।

हम को इधर अपनों की 'जिगर' ! धूप भली है,
तुम को हो मुबारक उधर अग़यार[2] का साया।

1. कच्चा 2. पराये

क्या कहें, ज़ाहरा मुस्कान से क्या लेते हैं ?
यूं हम अंदर की तबाही को छुपा लेते हैं।

ज़िन्दगानी के अंधेरों को मिटाने के लिए,
हम तेरे नाम की क़िन्दील[1] जला लेते हैं।

जब भी मिलती है ख़ुशी, दिल में छुपा लेता हूं,
जानता हूं, यह जहां वाले चुरा लेते हैं।

इक नज़र देखने पर आप ख़फ़ा हो बैठे ?
जोत से जोत सभी लोग जला लेते हैं।

अपनी बे - समझी से कुछ और समझ लेता हूं,
मुझसे रसमन वो अगर हाथ मिला लेते हैं।

शब-ए-ग़म दिल के वसीले[2] से गुज़र जाती है।
उस की सुन लेते हैं, कुछ अपनी सुना लेते हैं।

यूं तड़पते हैं कि वो साथ तड़प उठता है,
दर्द-ए-दिल को हमीं हम दर्द बना लेते हैं।

हुस्न वालों का मुक़द्दर भी हसीं है कितना !
दर्द देते हैं जिन्हें, उनसे दुआ लेते हैं।

ग़ैर मुमकिन[3] है कि वो ग़ैर का फिर हो जाये,
'जिगर' इक बार जिसे अपना बना लेते हैं।

---

1. शमा 2. सबब 3. असम्भव

शोर - ए - फरियाद है जहां जायें !
हम कहां ले के सिसकीयां जायें !

मन्ज़िलों का विक़ार[1] घटने लगा,
कोशिशें कुछ तो रायेगां[2] जायें ।

राहें डसती हैं नागिनों की तरह,
राह-रौ[3] क्या करें, कहां जायें ।

आशियाने में जज़ब कर उनको,
बच के वापस न बिजलीयां जायें ।

ग़म ज़मीं पर हैं आस्मां की तरह,
भाग कर इन से हम कहां जायें ?

जब मुक़द्दर हमारे साथ रहे,
किस लिए छोड़ कर मकां जायें ?

आग की ज़द[4] में हैं सभी गुलशन,
हम कहां ले कर आशयां जायें ?

माजरा आंसुओं का क्या कहिए !
कारवां आयें, कारवां जायें ।

किस जगह मौत की नहीं है पहुंच ?
उस के डर से 'जिगर' ! कहां जायें ।

---

1. मोल 2. असफ़ल 3. मुसाफ़िर 4. लपेट

आज इतना ज़िन्दगी से तुम्हें प्यार हो गया,
कल क्या करोगे, मरना जो दुशवार हो गया ?

यह बात अपनी शान - ए - करीमी[1] से पूछिए,
क्यों आज इक ज़माना गुनाह-गार हो गया ?

इन्सान ने संभाल लिया कारो बार - ए - मौत,
यानि फ़रिशता मौत का बेकार हो गया।

दुनिया में रोशनी का कहीं नाम तक नहीं,
कहने को आफ़ताब[2] नमूदार[3] हो गया।

आज आदमी की तंग निगाही[4] न पूछिए,
आज़ाद हो कर और गिरफ़तार हो गया।

मक़तूल[5] की तरफ़ तो कोई देखता नहीं,
क़ातिल का इक ज़माना तरफ़दार हो गया।

अपने पराये की मुझे पहचान हो गई,
मैं गर्दिशों[6] में रह के भी हुशियार हो गया।

औरों पे साया करता रहा उमर भर जो शख़्स,
ख़ून उसका ज़ेरे - साया -ए - दीवार हो गया।

अब दोस्ती की बात सुने कौन ? ऐ 'जिगर' !
हर शख़्स दुशमनी का तरफ़दार हो गया।

---

1. दयालता 2. सूरज 3. उदय 4. रूढ़ि वादी विचार
5. मरने वाला 6. चक्कर

हज़ार दावे करे आफ़ताब, क्या होगा?
तू लाजवाब है, तेरा जवाब क्या होगा ?
किसी से प्यार के दो बोल भी नहीं मिलते,
ज़माना इससे ज़्यादा ख़राब क्या होगा ?
तेरे मिज़ाज की गरमी से जल रहे हैं दिल,
इस आफ़ताब से तेज़ आफ़ताब क्या होगा ?
तमाम उमर जला हूं मैं ग़म के शोलों में,
मुझे हयात[1] से बढ़ कर अज़ाब[2] क्या होगा ?
निगाह - सोज़[3] नज़ारों को कैसे देखेंगे हम ?
अगर वो हो भी गये बेनिक़ाब[4], क्या होगा ?
बदल के रख दिए दिल आज के ज़माने ने,
इस इन्क़लाब के बाद इन्क़लाब क्या होगा ?
जो दिन को चांद बने और रात को सूरज,
उस आदमी से कोई फ़ैज़-याब[5] क्या होगा ?
तू वो ग़ज़ल है सभी शेयर जिसके दिल-कश हैं,
मेरी नज़र से तेरा इन्तख़ाब[6] क्या होगा ?
स्वाल-ए-दीद[7] लिए जा रहा हूं फिर भी - जिगर ! 
यह जानते हुए उनका जवाब क्या होगा ?

1. जीवन 2. दुख 3. चुंधियाने वाले नज़ारे 4. बेपर्दा
5. फ़ायदा उठाना 6. चुनाव 7. दीदार का सवाल ।

सब्र कर सब्र, ऐ दिल-ए-नादां !
जब्र है चंद रोज़ का मेहमां !

कोई भी मसअला सुलझता नहीं,
अक़्ल ने और कर दिया नादां !

और अरमां तो हो गये पूरे,
रह गया एक मौत का अरमां।

कौन समझाये चारा-साज़ों को,
दर्द है मेरे दर्द का दरमां[1]।

क़ातिलों को दुआयें देता हूं,
हो गये पूरे दिल के सब अरमां।

कीजिए उसके ग़म का अन्दाज़ा,
जो समझता हो क़तल को एहसां।

जी के मरता है, मर के जीता है,
चैन इन्सान को यहां न वहां।

यह तिजारत नहीं, महब्बत है,
सोचता क्या है फ़ायदा, नुक़सां।

इसमें इनसानियत तलाश न कर,
ऐ 'जिगर' ! यह है आज का इन्सां।

1. इलाज

हम से न हुई पूरी तेरे ग़म की ज़रूरत,
बाक़ी है अभी दीदा-ए-पुरनम की ज़रूरत।

नफ़रत की कड़ी धूप में जो शख़्स जला हो,
उस शख़्स को है प्यार के मौसम की ज़रूरत।

ये दौर महब्बत का सबक़ भूल चुका है,
इस दौर को है 'नानक'-ओ-'गौतम' की ज़रूरत।

निशतर से कभी भरते नहीं ज़ख़्म दिलों के,
ऐ चारागरो ! इन को है मरहम की ज़रूरत।

दिल को जो बदलना है तो फिर दिल से बदलिए,
बेकार है 'इसकन्दर' - ओ - 'रुस्तम' की ज़रूरत।

सुनते हैं कि वो प्यास की शिद्दत से मरा है,
जिस शख़्स को हर वक़्त थी कुलज़म[1] की ज़रूरत।

जब तक है फक़ीरी ही तेरे दिल की अमीरी,
'हातिम'[2] को ज़रुरत है न 'विक्रम'[3] की ज़रूरत।

अंगड़ाईयां फिर दर्द - ए - जिगर लेने लगा है,
फिर आ ही पड़ी है किसी मैहरम[4] की ज़रूरत।

दिल कहता है रो रो के 'जिगर' ! अब के बरस हम,
पूरी करें बरसात के मौसम की ज़रूरत।

1. समुन्द्र 2,3. दानी पुरुष 4. साथी

मैं फ़ना[1] हो के भी फ़ना न हुआ,
बुलबुला पानी से जुदा न हुआ।

दिल से मिलना तो उसको आता नहीं,
वो हमारा हुआ, हुआ, न हुआ।

उम्र तेरी तलाश में गुज़री,
मैं कभी ख़ुद से आशना[2] न हुआ।

हमसे नफ़रत है, या महब्बत है,
तुम से तो यह भी फ़ैसला न हुआ।

किस बहाने से जान लेता है,
वो बुरा करके भी बुरा न हुआ।

नाम तक लोग भूल जाते है,
इक फ़साना हुआ, ख़ुदा न हुआ।

हम कहां उनको देख सकते थे?
ख़ैर गुज़री जो सामना न हुआ।

तीर-अंदाज़ ऐसी मौत ही है,
तीर जिसका कभी ख़ता[3] न हुआ।

आप क्या पूछते हैं हाले 'जिगर'?
मुस्कराये उसे ज़माना हुआ।

1. मिटना 2. परिचित 3. चूकना

कितनी आंखों को रुलाती है घटा बरसात की,
कितने सीनों को सताती है हवा बरसात की।

चारों जानिब बह रही हैं जब लहू की नद्धीयां,
किस जगह से लाये फिर पानी घटा बरसात की।

आंसुओं की बारिशों से तूने दामन भर दिए,
ऐ ख़ुदा ! हमने तो माँगी थी दुआ बरसात की।

हर तरफ़ धरती पे नफ़रत की घटायें देखकर,
आसमां पर रो पड़ी काली घटा बरसात की।

रह गया है अपनी आंखों को फ़क्त[1] रोने से काम,
शायद इनको लग गई है बददुआ बरसात की।

देखना यह है बुझा पाती भी है धरती की प्यास,
नाज़ से उट्ठी तो है काली घटा बरसात की।

देखकर शाम - ए - जुदाई में किसी की सिसकीयां,
रो रही है बे - तरह[2] काली घटा बरसात की।

ख़ून इतना है ज़मीं पर, तुझको धोने के लिए,
हशर[3] तक रोना पड़ेगा, ऐ घटा बरसात की।

काश अपनी ज़िन्दगी में वो भी दिन आयें 'जिगर' !
ले के आये प्यार की बूंदें घटा बरसात की।

1. केवल 2. बहुत 3. क़यामत

# कतआत

### आदमी

फूल कितना भी ख़ूबसूरत हो,
उसमें नकहत[1] नहीं तो कुछ भी नहीं।
लाख जौहर[2] हों आदमी में अगर,
आदमियत नहीं तो कुछ भी नहीं।

### ज़िन्दगी

जो हो बेज़ार[3] जीने से, उसको,
रंज क्या चीज़ है? ख़ुशी क्या है?
दिन गुज़रते हों जिसके गिन गिन कर,
पूछिए उससे, ज़िन्दगी क्या है?

### दिल का किरदार

सर खपाते हैं यूहीं आप, 'जिगर'!
कौन इस दिल को समझ पाता है?
जान देता है कभी फूलों पर,
कभी कांटों पे यह मर जाता है।

---

1. ख़ुशबू 2. ख़ूबियां 3. तंग

## फ़ितरत-ए-दुनिया[1]

इसकी परवा न करो, ग़म न करो,
अहले - दुनिया तुम्हें क्या कहते हैं ?
ऐ 'जिगर' ! उनकी ये मजबूरी है,
अच्छे अच्छों को बुरा कहते हैं ।

## गुस्सा

इससे बढ़ कर कोई नहीं दुश्मन,
ज़िन्दगी के चिराग़ का, प्यारे !
ख़ुद को ग़ुस्से से रख बचा कर तू,
ये है कैंसर दिमाग़ का, प्यारे !

## ये लोग

आप क्या सोच कर जनाब-ए-'जिगर' !
उनसे उम्मीद बांधे बैठें हैं ?
चंद सिक्कों के वास्ते जो लोग,
अपना ईमान बेच देते हैं !

1. दुनिया का स्वभाव

### मौत

किस लिए कांपता है दिल तेरा ?
जान क्यों तेरी थरथराती है ?
सभी दुख, दर्द भाग जाते हैं,
मौत जिस वक़्त पास आती है।

### अन्धों की नगरी

प्यार की बातों से क्या इनको ग़रज़,
दिल में जो कीने[1] लिए फिरते हैं ?
किस लिए अन्धों की नगरी में 'जिगर' !
आप आईने लिए फिरते हैं ।

### इहसास

दिल मेरा रंज - ओ - ग़म के हमलों से,
गो हमेशा उदास रहता है ।
फिर भी ये ना - उमीद होता नहीं,
क्योंकि तू आस पास रहता है।

1. खोट

## आलम - ए - जवानी

मह - लिक़ा[1], मह जबीन[2] होती है,
दिल कुशा[3], दिल नशीन[4] होती है,
ऐ 'जिगर' आलम - ए - जवानी में,
ज़ीस्त[5] बेहद हसीन होती है ।

## नशा - ए - तक़दीर

अपनी तक़दीर पे तू नाज़ न कर,
यह नशा चढ़ के उतर जायेगा,
आज मग़रूर है जिस सूरत पर,
कल इसे देख के डर जायेगा ।

## मैं

न कोई दिल - नशीं फ़साना हूं,
न मैं दिलकश[6] कोई तराना हूं,
लोग क्या मुझको याद रक्खेंगे ?
मैं गया गुज़रा इक ज़माना हूं ।

---

1. चांद जैसी 2. सुन्दर 3. मन मोहनी 4. प्यारी
5. जिन्दगी 6. मन मोहक

### पेड़ और इनसान

यह तो क़ुदरत का है असूल कि पेड़,
सर झुकाता है, जब फल आता है,
मगर इन्सां की है अजब फ़ितरत,
दौलत आती है, सर उठाता है।

### दिल की ज़बां

नाज़, अन्दाज़, रंग, ढंग, अदा,
हम सब ऐ जान-ए-जां समझते हैं,
नहीं बेदिल[1] तेरी ख़मोशी से,
तेरे दिल की ज़बां समझते हैं।

### दाग़ - ओ - ज़ख़्म

है बदन पर लिबास दाग़ों का,
जान ज़ख़्मों से छलनी छलनी है,
ज़िन्दगी की डरावनी सूरत,
किसको मालम, कब बदलनी है ?

---

. मायूस

### गुनाह - ए - इश्क़

ऐसा उतरा कोई निगाहों में,
सब उतरते गये निगाहों से,
इश्क़ का इक गुनाह करके 'जिगर' !
बच गये हम कई गुनाहों से ।

### शूमो - ए - क़िस्मत[1]

छोड़ कर गुल की नाज़ बरदारी[2],
दिल नवाज़ी[3]-ए-ख़ार कौन करे ?
जिसकी क़िस्मत में लिखी हो नफ़रत,
ऐ 'जिगर' ! उससे प्यार कौन करे ?

### बेटा और शजर[4]

साया पहुंचायेगा ज़रूर, ऐ दोस्त !
एक दिन बन के यह शजर हमको,
ऐ 'जिगर' ! बेटे की ख़ुदा जाने,
नन्हें पौदे की है ख़बर हमको ।

---

1. बद क़िस्मती 2. नाज़ उठाना 3. मन परचावा 4. पेड़

## बेबसी

कभी अच्छा, भला नहीं कहते,
रहमदिल बावफ़ा[1] नहीं कहते,
हाल उनका ख़ुदा ही जाने 'जिगर' !
जो ख़ुदा को ख़ुदा नहीं कहते।

## इहसास - ए - अंजाम

हो टूटने वाला न कहीं जाम हमारा,
होने को न हो ख़तम कहीं काम हमारा,
ढलता हुआ सूरज न हो अंजाम हमारा,
दिल डूबने लगता है सर-ए-शाम[2] हमारा।

## ज्ञान - अज्ञान

ज़िन्दगी की असलीयत को जान कर,
रंज-ओ-ग़म में मुबतला इन्सान है,
हर तरह का चैन है अन्जान को,
ज्ञान से बेहतर 'जिगर'! अज्ञान है।

1. वफ़ादार 2. सांय काल

## ज़िन्दगी का आंगन

लब पे हलकी सी मुस्कराहट है !
और सीने में ज़ख़्म गहरे हैं !
ऐ 'जिगर' ! ज़िन्दगी के आंगन में,
फूल कम, बेशुमार कांटे हैं ।

## गीली लकड़ी

ग़म की चिंगारियों से रूह मेरी,
थर थराई है बहुत तड़पी है !
अभी जलने के नहीं क़ाबिल यह,
गीली लकड़ी है, धुआं देती है !

## अधूरा आदमी

रोने लगता है ग़म में ज़ार-ओ-क़तार[1],
ऐश में क़हक़हे लगाता है !
राज़ - ए - हस्ती[2] तुझे नहीं मालूम,
आदमी तू अभी अधूरा है ।

1. बहुत 2. जीवन का भेद

## बुरा वक़्त

उनकी इज़्ज़त गई, विक़ार[1] गया,
उनकी राहत गई, क़रार[2] गया।
ऐ 'जिगर' ! वक़्त के बिगड़ने से,
अच्छे अच्छों का एतबार गया।

## अच्छा वक़्त

साहिब - ए - इक़तदार[3] होता है,
साहिब - ए इख़तयार[4] होता है,
जान होता है महफ़िलों की बशर,
वक़्त जब साज़गार[5] होता है।

## दौलत

यह तो मुमकिन है कि दौलत के सबब,
तुझको हर नेमत - ए - कौनैन[6] मिले,
मगर ऐ दोस्त ! ज़रूरी तो नहीं,
दिल को तसकीन मिले, चैन मिले।

---

1 शान 2. चैन 3. इज्ज़तदार 4. हाकिम 5. मद्दगार
6. दोनों जहां की नेमतें

## कांटे

लाख क़हने को हैं बुरे कांटे,
सोचिए तो कमाल करते हैं,
उम्र भर तीर लेके हाथों में,
फूलों की देख भाल करते हैं।

## ख़ूबी - ए - मौत

लाख जनाज़े रोज़ उठते हैं,
मौत के हाथों गांव, नगर से,
फिर भी इसमें इक ख़ूबी है,
सब को देखे एक नज़र से।

## सीरत - ए - नेक[1]

मिट के भी अपने साथ रखता है,
नेक इन्सान नेक सीरत को,
मसले जाने के बावजूद गुलाब,
तर्क[2] करता नहीं है नकहत[3] को।

---

1. अच्छा मिज़ाज 2. छोड़ना 3. ख़ुशबू

## आंधी

तुम ने बेशक उसे नहीं देखा,
न हमारी नज़र से गुज़री है,
गर्द कहती है सबके चेहरों की,
कोई आंधी इधर से गुज़री है।

## साक़ीया

सबकी हसरत कब निकाली जायेगी ?
सब के दिल से कब दुआ ली जायेगी ?
कब तवज्जो[1] होगी सब पर साक़ीया !
सबके लब तक कब प्याली जायेगी ?

## अंगूर की बेटी[2]

मय से इक बार जो नाता जोड़ा,
पीने वालों ने न पीना छोड़ा,
एक अंगूर की बेटी के लिए,
अपने मां - बाप से रिशता तोड़ा।

1. ध्यान 2. शराब

## दर्द का रिशता

अजनबी चेहरे भी जब देखता हूं रंजीदा[1]
ग़म के तूफ़ान मेरे दिल में उमड़ आते हैं !
सोचता हूं कि कोई रिशता तो उनसे होगा,
मेरी आंखों के जो पैमाने छलक जाते हैं।

## तक़दीर

अपनी तक़दीर पे मग़रूर न हो ऐ नादां !
वक़्त के हाथ में तक़दीर है इन्सानों की,
कल गुल-ओ-सर्व[2] के पाये में जिन्हें देखा था,
आज वो छानते हैं ख़ाक बियाबानों[3] की।

## आदमी के रूप

इक वो भी आदमी है सर-ए-रहगुज़ार[4] जो,
रखता है एक एक क़दम देखभाल कर,
इक वो भी आदमी है ज़माने में देखिए,
खाता है जो मज़ारों से मुर्दे निकाल कर।

1. दुखी 2. ऐश्वर्य 3. जंगलों 4. रास्ते में।

## अपने - पराये

ऐ 'जिगर' ! जिस वक़्त मुझ पर कोई मुशकिल आ पड़ी,
मेहर - बानों, दोस्तों का बंद दरवाज़ा हुआ,
अपने दामन से जो पोंछ ग़ैर ने आंसू मेरे,
मुझको इन अपनों के अपने पन का अंदाज़ा हुआ ।

## बेदाद - ए - दोस्त[1]

क्या गुज़रती है मेरे दिल पर न मुझसे पूछिए,
उनसे जब कहता हूं ये - "बेदाद से मरता हूं मैं"
शादमां होते हैं वो मेरी तड़प से ऐ 'जिगर' !
यह अदाकारी तो उनके वास्ते करता हूं मैं ।

## तवक्कुआत[2]

हो सिर्फ़ एक नाम ज़बानों पे सुबह् - ओ - शाम,
वक़्त ऐसा आया है, न कभी ऐसा आयेगा,
इतनी तवक्कुआत न दुनियां से बांधिये,
मायूसीयों का बोझ उठाया न जायेगा ।

1. दोस्त का ज़ुल्म 2. उम्मीदें

## आज का इन्सां

है परेशां सर से लेकर पाओं तक जैसे धुआं !
रात दिन रहती है उसके लब पे फ़रयाद-ओ-फ़ुग़ां[1] !
आज के इन्सां के अन्दर आग इतनी है 'जिगर' !
सांस लेता है तो बाहर आती हैं चिंगारियां !

## इज़हार

तेरी बातें तो बहुत मीठी हैं,
लेकिन अंदाज़-ए-बयां[2] कड़वा है !
मुझसे नाराज़ है तू आज बहुत,
सुर्ख़ चेहरे से पता चलता है ।

## मजबूरी

ऐ 'जिगर' ! दिल से तड़पा जाता नहीं,
रोज़ इतने जनाज़े उठते हैं,
आंसुओं को तरसती हैं आखें,
हाय, कितने जनाज़े उठते हैं !

---

1. चीख़ - पुकार 2. बोलने का ढंग

### मुर्दा-परस्ती

जाने वालों को फ़र्क़ पड़ता नहीं,
किसी के आने से, न आने से,
हो नहीं सकते मुर्दा तो ज़िंदा,
फायदा अर्थियां सजाने से ?

### रूह की चाल

कानों कान इसकी ख़बर होती नहीं,
रूह चाल इससे वो चल जाती है,
छोड़ कर रस्ते में इन्सां को 'जिगर' !
खुद कहीं दूर निकल जाती है ।

### ये दुनिया

हो रहे हैं क़त्ल जो चारों तरफ़,
वजह तो इनकी कोई मिलती नहीं,
ऐ 'जिगर' ! इक आदमी की मौत से,
दूसरे को जिन्दगी मिलती नहीं ।

### बदलते मौसम

महब्बत से, वफ़ा से, दोस्ती से,
जुदा अहबाब[1] होते जा रहे हैं,
तअल्लुक़ था किसी से जब किसी को,
वो मौसम ख़्वाब होते जा रहे हैं।

### नाम-काम

नाम इक पहचान है इन्सान की,
नाम से छोटा बड़ा कोई नहीं,
ऐ 'जिगर'! यह सोचने की बात है,
काम से छोटा बड़ा कोई नहीं।

### जवानी की कहानी

कितने ही शौक़ से लिक्खी थी-मगर,
कौन पढ़ता है कहानी मेरी ?
काले हर्फ़ों के मज़ारों में 'जिगर !
हो गई दफ़न जवानी मेरी ।

---

1. दोस्त

### मरज़े-लाइला

ग़म-ए - दिल का कोई इलाज नहीं,
मौत टाले से टल नहीं सकती,
रात को दिन का नाम देने से,
रात दिन में बदल नहीं सकती ।

### चाल

ये चाल आपकी है ख़ूब,
किसी को पहले मारिए,
सजा कर उसकी मूर्ति,
फिर आरती उतारिए ।

### ख़ुदगरज़ी

आदमी का चलन रहा है यही,
आया है ये वजूद में जब से,
इसको मतलब नहीं किसी से कोई,
सिर्फ़ मतलब है अपने मतलब से ।

### तू और मैं

मेरे ज़ेबा[1] सलूक पर तू आज,
इस क़दर क्यों है सीख-पा[2] - प्यारे !
कल तेरे ना - ख़ा[3] ख़य्ये पर,
मैं ज़रा भी न था ख़फ़ा - प्यारे !

### इहसास - ए - रुख़सत

ग़म से रंजूर[4] हुए जाते हैं !
रंज से चूर हुए जाते हैं !
हमसे वो दूर हुए जाते हैं !
दीदे[5] बेनूर[6] हुए जाते हैं !

### तारीख़ - के गवाह

क़हरों से, जुर्मों से, गुनाहों से,
चीख़ों से, आंसुओं से, आहों से,
ऐ 'जिगर' ! इस ज़माने की तारीख़,
कल मिलेगी इन्हीं गवाहों से।

---

1. मुनासिब 2. तिलमिलाना 3. ना मुनासिब 4. दुखी
5. आंखें 6. बेरोशन।

## कमाल-ए-ख़ालिक़[1]

न किसी का जमाल[2] देखते हैं,
न किसी का जलाल[3] देखते हैं,
इनको तख़लीक[4] करने वालों का,
ऐ 'जिगर' ! हम कमाल देखते हैं।

## दर्द-ओ-असर

जब तक इन्सान मर नहीं जाता,
बोझ सर से उतर नहीं जाता,
दर्द-ए-दिल तो चला ही जाता है,
दर्द-ए-दिल का असर नहीं जाता।

## पराई आस

तू बनके यूं अपाहिज, कासा[5] उठाये हर दम,
अग़यार[6] के सहारे पलता रहेगा कब तक ?
यह ज़िन्दगी का रस्ता इक दो क़दम नहीं है,
बेसाखीयों के बल पर चलता रहेगा कब तक ?

---

1. परमात्मा का कमाल 2. ख़ूबसूरती 3. जलवा 4. पैदा
5. प्याला 6. पराये।

### बद-नसीबी

वो बहुत बदनसीब होते हैं,
ख़ुद ही अपने रक़ीब होते हैं,
जिनका दुनिया में कोई दोस्त नहीं,
सबसे बढ़ कर ग़रीब होते हैं।

### इलाज-ए-दर्द-ए-दिल

न किसी की दवा से जायेगा,
न किसी की दुआ से जायेगा,
न मेरी इल्तजा से जायेगा,
दर्द दिल का क़ज़ा[1] से जायेगा।

### कमाल-ए-हुस्न

सौ बहारें हैं इक तबस्सुम[2] में!
सौ तराने हैं इक तकल्लुम[3] में!
रक़्स[4] में कायेनात[5] आ जाये!
वो असर है तेरे तरन्नुम[6] में!

---

1. मौत 2. मुस्कान 3. बात 4. नाच 5. दुनिया
6. गुनगुनाना

## बहार-ए-ज़िन्दगी

डाल दे तू जो सरसरी सी नज़र,
दिल-ओ-जां को क़रार आ जाये,
एक हल्की सी मुस्कराहट पर,
ज़िन्दगी में बहार आ जाये ।

## ऐ सितमगर

ऐ सितमगर ! तेरे तग़ाफ़ुल[1] ने,
दिल के जज़बात मार डाले हैं !
लुट गया हो जो शख़्स-उसके लिए,
क्या अंधेरे हैं, क्या उजाले हैं ?

## कसरत-ए-रंज-ओ-ग़म[2]

इस क़दर रंज-ओ-ग़म हैं सीने में,
अब तबीयत बहल नहीं सकती,
तेरी ख़ाहिश के बावजूद ऐ दोस्त !
दिल से हसरत निकल नहीं सकती !

1. बेरुख़ी 2. दुखों की अधिकता

### मौत और ज़िन्दगी

ऐ 'जिगर' ! मौत नाम है जिसका,
ज़िन्दगी ही का एक पहलू है।
हमको मालूम है यह तारीकी[1],
रोशन ही का एक पहलू है।

### हम लोग

इस क़दर दिल फ़िगार[2] हैं हम लोग,
रात दिन अश्क-बार[3] हैं हम लोग !
मांगते हैं दुआयें मरने की,
किस क़दर बेक़रार हैं हम लोग !

### सूरत - सीरत

अच्छी सूरत बुरी नहीं-लेकिन,
अच्छी सीरत भी हो तो क्या कहने !
फूल का रंग तो है खूब-मगर,
साथ नकहत भी हो तो क्या कहने !

---

1. अंधेरा 2. जख्मी दिल 3. रोते रहना

## हम-सफ़र

दी क़दम साथ साथ चलने से
राह्-रौ[1] हम-सफ़र[2] नहीं बनते
बनते हैं आपसी महब्बत से
चूने पत्थर से घर नहीं बनते ।

## राज़-ए-मुसर्रत[3]

जो बे - गरज़ हो, नाम महब्बत उसी का है,
ख़ून-ए - जिगर का मोल लगाया न कीजिए
दामन जो अपना फूलों से भरना है आपको
पौधा लगा के फल की तमन्ना न कीजिए ।

## दुनियादारी

मक़बूल-ऐ-ख़ास-ओ-आम जो होना है आपको
अपना विक़ार[4], अपनी ख़ुदी भूल जाईए
आईना बनिए ऐसा कि हर साहिब-ए-नज़र[5]
जैसा भी चाहे, वैसा ही चेहरा दिखाईए ।

---

1. राही 2. साथी 3. ख़ुशी का राज़ 4. इज़्ज़त 5. देखने वाला

**यकसानियत**[1]

उनकी नज़रों में सब बराबर हैं,
नेक जिनका ख़याल होता है,
आदमी का हो कोई रंग मगर,
ख़ून का रंग लाल होता है।

**तलिसम - ए - महब्बत**[2]

आंखें मेरी हों - जुस्तुजू[3] तेरी,
होंट मेरे हों - गुफ़्तुगू[4] तेरी,
क्या महब्बत इसी को कहते हैं,
सीना मेरा हो – आरज़ू तेरी ?

**राहत - ए - दिल**

शान - औ - शौकत को चाहने वालो !
जाह[5] ओ - हशमत[6] को चाहने वालो !
राहत - ए - दिल बहुत बड़ी शै है !
माल - ओ - दौलत को चाहने वालो !

---

1. बराबरी 2. प्यार का जादू 3. तलाश 4. बात 5. रुतबा
6. दबदबा ।

## इनसां और ग़म

रात, दिन, सुबह - ओ - शाम डसते हैं,
फ़िक्र, तशवीश, रंज, ग़म के सांप,
पीते रहते हैं ख़ून इनसां का,
काले, पीले, सफ़ेद नीले सांप ।

## शेयर - ओ - सुखन[1]

ख़ूब सोचा भी, ख़ूब समझा भी,
ख़ूब देखा है, ख़ूब भाला है,
ज़िन्दगी की हक़ीक़तों को 'जिगर'
हमने शेयर-ओ सुखन में ढाला है ।

## दाना - नादां

जो हैं दाना, वो ज़िन्दगानी से,
क़ाबिल-ए-रश्क[2] काम लेते हैं,
जो हैं नादां, वो बेहतरीं लम्हे,
इक लड़ाई में काट देते हैं ।

1. शायरी 2. अच्छे काम

## उदास दिल

हुस्न रहता नहीं बहारों में,
नूर रहता नहीं सितारों में,
एक दिल के उदास होने से,
लुत्फ़ रहता नहीं नज़ारों में।

## सलीब-ए-ग़म[1]

इक तरफ़ मुझको अपने ग़म का ख़याल,
इक तरफ़ ग़म-ज़दा[2] हबीबों[3] का,
ज़िन्दगी भर मुझे उठाना है,
'ऐ जिगर' ! बोझ इन सलीबों का।

## फूल - ख़ार

ऐश - इशरत - ख़ुशी - निशात - करार,
रंज - तकलीफ़ - दर्द - ग़म - आज़ार,
तूने बख़्शे हैं इक को फूल ही फूल,
और बख़्शे हैं इक को ख़ार ही ख़ार।

---

1. ग़म की सूली 2. दुखी 3. दोस्त

## रिशतों की ज़ंजीरें

जब पास हों तो रुख़ से निगाहें न मोड़ना,
जब दूर हों तो उनका तसव्वुर न छोड़ना,
'ऐ दोस्त' ! दिल लगाने से पहले ये सोच ले,
मुशकिल बहुत है रिशतों की ज़ंजीरें तोड़ना ।

## शब - ए - फ़िराक़[1]

बेक़रारी है, आह - ओ - ज़ारी है,
चश्म - ए - गिरीयां[2] से ख़ून जारी है,
सुबह होती नज़र नहीं आती,
आज की रात इतनी भारी है ।

## रसते

रसते चलना हमें सिखाते हैं,
हम हैं, रसतों को भूल जाते हैं,
हम को पहुंचाते हैं वो मंज़िल तक,
हम उन्हें पीछे छोड़ आते हैं ।

1. जुदाई की रात 2. रोती आंख

## इलाज - ए - ग़म

भूल कर रंज-ओ-ग़म में नाम-ए-ख़ुदा,
सागर - ए - मय[1] मुदाम[2] लेते हैं,
दिल की तारीकियां[3] मिटाने को,
हम चिरागों से काम लेते हैं ।

## ज़िन्दगी के पर्दे में

जब्र को रोकने की ताब नहीं,
सब्र को इख़्तियार करते हैं,
हम 'जिगर' ! ज़िन्दगी के पर्दे में,
मौत का इन्तज़ार करते हैं ।

## रहमत - ए - ख़ुदा

आस्तिक को विक़ार[4] मिलता है,
नास्तिक को भी प्यार मिलता है,
तेरे दर से सभी को ऐ दाता !
बेतलब[5], बे शुमार मिलता है !

---

1. शराब का प्याला 2. हमेशा 3. अंधेरे 4. इज़्ज़त 5. बिन मांगे

## समुन्दर की प्यास

इनको हासिल है एक इक नेमत,
फिर भी कितने उदास हैं ये लोग ?
इनकी तसकीन हो नहीं सकती,
इक समुन्दर की प्यास हैं ये लोग !

## छोटा - बड़ा

जब हक़ीक़त ये है कि दुनिया में,
नहीं या रब ! तेरे सिवा कोई,
क्यों फिर इसको नहीं समझते लोग,
कोई छोटा न है बड़ा कोई ?

## याद - ए - माज़ी[1]

आंख में आसुंओं के तूफ़ां थे !
लब पे आठों पहर थी आह ही आह !
कैसा वक़्त आयेगा, ख़ुदा जाने !
वक्त गुज़रा है जो, ख़ुदा की पनाह[2] !

1. अतीत की याद 2. बुरा वक़्त

## दर्द - ए - दिल

ये तेरा दिल बहुत दुखायेगा,
हाथ दिल से उठा न पायेगा,
कोई क़िस्सा नहीं, लतीफ़ा नहीं,
दर्द-ए-दिल है, सुना न जायेगा।

## एजाज़ - ए - हुस्न[1]

तुम मिला लो अगर नज़र से नज़र,
दिल सरापा बहार हो जाये !
और भूले से मुसकरा दो अगर,
सांस फूलों का हार हो जाये !

## फ़रेब - ए - ज़िन्दगी

इसकी हर इक अदा पे मरता हूं,
जो भी यह चाहती है करता हूं,
इसकी चालें भी मुझ पे रोशन हैं,
इसलिए ज़िन्दगी से डरता हूं।

---

1. हुस्न का करिश्मा

## कल और आज

उन असूलों को पूछता है कौन ?
जिन असूलों की बात करते हैं,
पूजे जाते हैं अब तो कांटे, 'जिगर' !
आप फूलों की बात करते हैं।

## असर - ए - जुदाई

जब मुलाक़ात - ए - बाहमी[1] न रही,
ज़िन्दगी अपनी ज़िन्दगी न रही !
फूल कलियों में रंग - ओ - बू न रहे,
चांद तारों में रोशनी न रही ।

## मेरा नज़रीया

इक मुझी पर किसी के लुत्फ़-ओ-करम ?
दूसरों पर सितम समझता हूं,
जिस ख़ुशी से किसी को ग़म हो, 'जिगर' !
उस ख़ुशी को मैं ग़म समझता हूं।

1. आपसी मेल मिलाप

## दिल को तस्कीन

प्यार का ऐहतराम करके तो देख,
ज़िन्दगी इसके नाम करके तो देख,
दिल की तसकीन ढूंडने वाले !
तू कोई नेक काम कर के तो देख।

## निबाह

ज़िन्दगी दिन को भी रही दुशमन,
रात को भी न ये बनी मेरी !
मौत के वक़्त सोचता हूं, 'जिगर' !
किस तरह इससे निभ गई मेरी !

## मसअलों का हल

क़तल-ओ-ग़ारत की बात करते हो ?
क्यों शरारत की बात करते हो ?
मसअले प्यार से सुलझते हैं ?
तुम हक़ारत[1] की बात करते हो ?

---

1. नफ़रत

## इत्मीनान

न मिले वो तो क्या है ग़म मैंने,
ख़ाहिश-ए-दीद ही नहीं की है,
ना उम्मीदी उसे सतायेगी क्या,
जिसने उम्मीद ही नहीं की है ?

## फूल - धूल

मिटाया उन्हें बरक़-ए-रंज-ओ-अलम[1] ने,
रहे बाग़ - ए - हस्ती में जो फूल बन कर,
न था उन पे कोई असर हादिसों का,
रहे तेरे क़दमों में जो धूल बनकर।

## कामयाबी

न तो हूं मैं ग़ुलाब धरती का,
न फ़लक[2] ही का माहताब[3] हूं मैं,
फिर भी उठती हैं उंगलीयां मुझ पर,
इसका मतलब है, कामयाब हूं मैं।

1. दुखों की बिजली 2. आकाश 3. चांद

### ग़रूर

माल - ओ - दौलत पे तू ग़रूर न कर,
शान - ओ - शौकत पे तू ग़रूर न कर,
तेरी क़िस्मत किसी के हाथ में है,
अपनी क़िस्मत पे तू ग़रूर न कर।

### ख़ुदा

कौन जीता है अपनी मर्ज़ी से ?
अपनी मर्ज़ी से कौन मरता है ?
जो भी चाहा किसी ने, वो न हुआ,
जो ख़ुदा चाहता है, करता है ।

### प्यार

तेरी नज़रों में छोड़ना इसका,
एक छोटी सी बात है - प्यारे !
जीते जी हम तो छोड़ सकते नहीं,
प्यार अपनी हयात[1] है - प्यारे !

---

1. जीवन

## अंधेरे – सवेरे

क्यों हों मायूस हम अंधेरों से ?
आज अंधेरे हैं, कल सवेरे हैं,
देर तक इक जगह नहीं रुकते,
रात दिन जोगीयों के डेरे हैं !

## यक़ीन - ए - महब्बत

क्यों जफ़ायों को जफ़ायें समझूं ?
शक नहीं आप की नीयत पे मुझे,
आप बरहम[1] हुए, नाराज़ हुए,
फ़ख़र होता है महब्बत पे मुझे।

## तन्हाई

उसको इसकी ख़बर नहीं होती,
आस पास उसके कौन बैठा है ?
घेर रक्खा हो जिसको ग़म ने-'जिगर' !
वो बशर भीड़ में भी तन्हा है।

---

1. ख़फ़ा

### एक मंज़र

हलकी हलकी हवा की लहरों से,
यूं कली लहलहाये जाती है,
जैसे सुन कर पीया की बातें दुल्हन,
ज़ेर - ए - लब मुस्कराये जाती है।

### हादिसों की नगरी

घर से बाहर न जायें कब तक लोग ?
बैठे आंसू बहायें कब तक लोग ?
ऐ 'जिगर' ! हादिसों की नगरी में,
ख़ैर अपनी मनायें कब तक लोग ?

### इहसास - ए - ख़ुदी[1]

इक मेहरबां की चश्म-ए-इनायत के फ़ैज़[2] से,
होने को मेरा काम सर-अंजाम[3] हो गया,
ख़ुद्दारीयों ने ज़ख़्म लगाये कुछ इस क़दर,
मैं कामयाब हो के भी नाकाम हो गया।

---

1. आत्म सम्मान का इहसास 2. बदौलत 3. सम्पन्न

## हुस्ने - एमाल[1]

बांटना औरों के दर्द औरों को ख़ुशीयां देना,
आदमीयत का सिवा इसके तक़ाज़ा[2] क्या है ?
हुस्ने - एमाल को समझा है मुक़द्धर हमने,
हमको मालूम नहीं हाथ की रेखा क्या है ?

## वक़्त का परिन्दा

दिल-ए-नादां ! अमल में आ अमल है ज़िन्दगी तेरी,
यूहीं बैठा हुआ बेकार मनसूबे बनाता है,
ये वक़्त ऐसा परिन्दा है, नहीं तुझको ख़बर शायद,
वहां वापस नहीं आता जहां से उड़ के जाता है।

## इनक़लाबे - ज़माना

याद आती है मुझे सोहबते - यारां[3] जिस वक़्त,
लग के दीवारों से रो लेता हूं तन्हाई में,
मुझको मालूम न था जश्ने-मुसर्रत[4] में 'जिगर' !
मातमी धुन भी छुपी बैठी है शहनाई में !

---

1. नेक काम 2. मांग 3. मित्रों का साथ 4. खुशी का जशन

### इक बात

मैंने तमाम अपना फ़साना सुना दिया,
अब मेरे पास कहने को कुछ भी रहा नहीं,
फिर क्यों ये बात आती है रह रह के ज़ेहन में,
कहना जो चाहता था वो मैंने कहा नहीं ?

### दिल

दो हर्फ़ों का है लफ़्ज़ - मगर इस पर ऐ 'जिगर' !
कितने कसीदे[1] - कितने तराने लिखे गये,
दिल चीज़ क्या है इसको न कोई समझ सका,
कितने मक़ाले[2] - कितने फ़साने लिखे गये ।

### ना पायेदारी-ए-ज़िन्दगी[3]

ज़िन्दगी ! हमसे न इतना प्यार कर,
देर तक ये रुत न रहने पायेगी,
कितनी भी मज़बूत हो तेरी गरिफ़्त[4],
मौत हमको छीन कर ले जायेगी ।

---

1. तारीफ़ 2. मज़ामून 3. जीवन की अस्थिरता 4. पकड़

### ज़िन्दगी और काम

काम सौंपे मुझे हज़ारों - मगर,
ज़िन्दगी सिर्फ़ चार दिन की दी,
सर को ढांपूं कि पाओं को ढांपूं,
तूने चादर बहुत ही छोटी दी।

### इहसास-ए-गुनाह

उम्र भर मैं गुनाहगार रहा,
मौत के वक़्त इस अज़ाब[1] में हूं,
साफ़ सुथरी जो ले के आया था,
मैली चादर है कैसे ले के चलूं ?

### दीवाना

दिल नज़ारों से कब बहलता है ?
चांद तारों से कब बहलता है ?
जो हो दीवाना तेरी बातों का,
वो इशारों से कब बहलता है।

---

1. दुख

### बेबस सवेरे

वो उजालों को ख़ुद तरसते हैं,
कुछ तवक़्क़ो थी जिन सवेरों से,
क्या नज़र आये अब किसी को 'जिगर' !
रोशनी बढ़ गई अंधेरों से ।

### सबर

हुआ ख़ामोश तड़प कर आख़िर,
ख़त्म कर पाया न जब दूरी को,
सबर का नाम दिया दुनिया ने,
एक इन्सान की मजबूरी को ।

### मीर - ए - महफ़िल[1]

जो है रोशन उन्हीं की लौ को क्या,
मीर-ए-महफिल ! बढ़ाये जाना है ?
जिन चिराग़ों से उठ रहा है धुआं,
उन चिराग़ों को भी जलाना है ?

---

1. सभापति

### दिल की फ़ितरत

कभी कहता है कि सब कुछ है मेरी ये दुनिया,
कभी कहता है कि इस दुनिया में रक्खा क्या है ?
आज तक इसको 'जिगर' ! हम न समझने पाये,
दिल की फ़ितरत कोई शबनम है कि शोला, क्या है ?

### क़ाबिल - ए - ग़ौर

ज़िंदगी - ओ - मौत का जब फ़ैसला,
आ गया है हाथ में इन्सान के,
ऐ 'जिगर' ! यह सोचने की बात है,
रह गया है पास क्या भगवान के ?

### कशिश - ए - हुस्न

ज़रा सी बात नज़रों में हुई थी,
बने जाते हैं अब जिसके फ़साने,
कोई खींचे लिया जाता है दिल को,
सुना कर प्यार के दिल - कश तराने !

## सारंग देव[1]

ऐ मेरी आंखो के उजियारे ! मेरे सारंग देव !
सौ दिल-ओ-जां से मुझे प्यारे ! मेरे सारंग देव !
याद आते हैं तेरे पेड़ों के साये मुझको,
जिनकी बाहों ने कई झूले झुलाये मुझको,
तेरे आंगन में बहुत खेला है बचपन मेरा,
तेरे अल्ताफ़[2] का ममनून[3] है तन मन मेरा,
भूलता ही नहीं रावी का किनारा मुझको,
जो अता[4] करता था लहरों का नज़ारा मुझको,
कर दिया गर्दिश-ए-दौरां[5] ने मुझे तुझसे दूर,
जी रहा हूं मैं तेरे हिज्र में होकर मजबूर !

---

1. लेखक की जन्म भूमि 2. मेहरबानीयां 3. अभारी 4. बख्शता
5. ज़माने का चक्र

जिगर जालन्धरी